ग़ज़वा मुरीसीअ के बाद की फ़ौजी मुहिमें

1. सरीया दयारे बनी कल्ब, इलाक़ा दूमतुल जन्दल

यह सरीया हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ के नेतृत्व में शाबान सन् 06 हि० में भेजा गया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें अपने सामने बिठा कर ख़ुद अपने मुबारक हाथों से पगड़ी बांधी और लड़ाई में सबसे अच्छी शक्ल अपनाने की वसीयत फ़रमाई और फ़रमाया कि अगर वे लोग तुम्हारी इताअत कर लें तो तुम उनके बादशाह की लड़की से शादी कर लेना।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने वहां पहुंचकर तीन दिन लगातार इस्लाम की दावत दी, आख़िरकार क़ौम ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। फिर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० ने तमाज़र बिन्त असबग़ से शादी की। यही हज़रत अब्दुर्रहमान के सुपुत्र अबू सलमा की मां हैं। इनके बाप अपनी क़ौम के सरदार और बादशाह थे।

2. सरीया दयार बनी साद, इलाक़ा फ़िदक

यह सरीया शाबान सन् 06 हि० में हज़रत अली रज़ि० के नेतृत्व में भेजा गया। इसकी वजह यह हुई कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम हुआ कि बनू साद का एक गिरोह यहूदियों को कुमक पहुंचाना चाहता है, इसलिए आपने हज़रत अली रज़ि० को दो सौ आदमी देकर रवाना फ़रमाया। ये लोग रात में सफ़र करते और दिन में छिपे रहते थे, आख़िर एक जासूस पकड़ में आया और उसने इक़रार किया कि उन लोगों ने ख़ैबर की खजूर के बदले में सहायता जुटाने की बात कही है। जासूस ने यह भी बतलाया कि बनू साद ने किस जगह जत्थबन्दी की है।

चुनांचे हज़रत अली रज़ि० ने उन पर छापा मारकर पांच सौ ऊंट और दो हज़ार बकरियों पर क़ब्ज़ा कर लिया, अलबत्ता बनू साद अपनी औरतों-बच्चों समेत भाग निकले। उनका सरदार वब्र बिन अलीम था।

3. सरीया वादिल क़ुरा

यह सरीया हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० या हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० के नेतृत्व में रमज़ान सन् 06 हि० में रवाना किया गया। इसकी वजह यह थी कि

बनू फ़ज़ारा की एक शाखा ने धोखे से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने का प्रोग्राम बनाया था। इसलिए आपने अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० को रवाना किया।

हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ि० का बयान है कि इस सरीए में मैं भी आपके साथ था। जब हम सुबह की नमाज़ पढ़ चुके तो आपके हुक्म से हम लोगों ने छापा मारा और चश्मे पर धावा बोल दिया। अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने कुछ लोगों को क़त्ल किया। मैंने गिरोह को देखा जिसमें औरतें और बच्चे भी थे। मुझे डर हुआ कि कहीं ये लोग मुझसे पहले पहाड़ पर न पहुंच जाएं, इसलिए मैंने उनको जा लिया और उनके और पहाड़ के बीच एक तीर चलाया। तीर देखकर ये लोग ठहर गए। इनमें उम्मे क़रफ़ा नामी एक औरत थी, जिसके ऊपर एक पुरानी पोस्तीन थी। उसके साथ उसकी बेटी भी थी जो अरब की सबसे ख़ूबसूरत औरतों में से थी। मैं इन सबको हांकता हुआ अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० के पास ले आया। उन्होंने वह लड़की मुझे दी, लेकिन मैंने उसका कपड़ा न खोला। बाद में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह लड़की हज़रत सलमा बिन अकबअ से मांगकर मक्का भेज दी और उसके बदले में वहां के कई मुसलमान क़ैदियों को रिहा करा लिया।[1]

उम्मे क़रफ़ा एक शैतान औरत थी, नबी सल्ल० के क़त्ल के उपाय किया करती थी और इस मक़्सद के लिए उसने अपने ख़ानदान के तीस सवार भी तैयार किए थे, इसलिए उसे ठीक बदला मिल गया और उसके तीसों सवार मारे गए।

4. सरीया उरनी यीन

यह सरीया सन् 06 हि० में हज़रत कर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी रज़ि०[2] के नेतृत्व में भेजा गया। इसकी वजह यह हुई कि अक्ल और उरैना के कुछ लोगों ने मदीना आकर इस्लाम का इज़्हार किया और मदीना ही में ठहर गए, लेकिन उनके लिए मदीना की जलवायु सही न साबित हुई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें कुछ ऊंटों के साथ चरागाह भेज दिया और हुक्म दिया कि ऊंटों का दूध और पेशाब पिएं।

जब ये लोग तन्दुरुस्त हो गए तो अल्लाह के रसूल सल्ल० के चरवाहे को

---

1. देखिए सहीह मुस्लिम 2/89। कहा जाता है कि यह सरीया सन् 07 में पेश आया।
2. यह वही हज़रत कर्ज़ बिन जाबिर फ़हरी हैं जिन्होंने बद्र की लड़ाई से पहले ग़ज़्वा सफ़वान में मदीना के जानवरों पर छापा मारा था। बाद में उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया और मक्का विजय के मौक़े पर शहादत के दर्जे को पहुंचे।

क़त्ल कर दिया। ऊंटों को हांक ले गए और इस्लाम ज़ाहिर करने के बाद अब फिर कुफ़्र अपना लिया, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनकी खोज के लिए कर्ज़ बिन जाहिर फ़हरी को बीस सहाबा के साथ रवाना किया और यह दुआ फ़रमाई कि ऐ अल्लाह! उर्नीयों पर रास्ता अंधा कर दे और कंगन से भी ज़्यादा तंग बना दे।

अल्लाह ने दुआ कुबूल फ़रमाई। उन पर रास्ता अंधा कर दिया, चुनांचे वे पकड़ लिए गए और उन्होंने मुसलमान चरवाहों के साथ जो कुछ किया था, उसके बदले के तौर पर उनके हाथ-पांव काट दिए गए, आंखें दाग़ दी गईं और उन्हें हर्रा के एक कोने में छोड़ दिया गया, जहां वे ज़मीन कुरेदते-कुरेदते अपने नतीजे को पहुंच गए।[1] इनकी घटना सहीह बुख़ारी वग़ैरह में हज़रत अनस रज़ि० से भी रिवायत की गई है।[2]

सीरत लिखने वाले इसके बाद एक और सरीया का ज़िक्र करते हैं, जिसे हज़रत अम्र बिन उमैया ज़मरी रज़ि० ने हज़रत सलमा बिन अबी सलमा के साथ शव्वाल सन् 06 हि० में सफल बनाया था। इसका विस्तृत विवेचन यह है कि हज़रत अम्र बिन उमैया ज़मरी अबू सुफ़ियान को क़त्ल करने के लिए मक्का तशरीफ़ ले गए थे, क्योंकि अबू सुफ़ियान ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने के लिए एक देहाती बद्दू को मदीना भेजा था। अलबत्ता दोनों फ़रीक़ों में से कोई भी अपनी मुहिम में सफल न हो सका।

सीरत लिखने वाले यह भी कहते हैं कि इसी सफ़र में हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी ने तीन काफ़िरों को क़त्ल किया और हज़रत ख़ुबैब की लाश उठाई थी, हालांकि हज़रत ख़ुबैब की शहादत की घटना रजीअ के कुछ दिन या कुछ महीने बाद की है और रजीअ की घटना सफ़र 04 हि० की है, इसलिए मैं यह समझने में असमर्थ हूं कि क्या ये दोनों दो-दो अलग-अलग सफ़र की घटनाएं हैं? मगर सीरत लिखने वाले गड़बड़ा गए और उन्होंने दोनों का एक ही सफ़र में उल्लेख कर दिया या यह कि सच में दोनों घटनाएं एक ही सफ़र में घटीं, लेकिन सीरत लिखने वालों से सन् तै करने में ग़लती हो गई और उन्होंने उसे 04 हिजरी के बजाए सन् 06 हि० में लिख दिया।

हज़रत अल्लामा मंसूरपुरी रह० ने भी इस घटना को जंगी मुहिम या सरीया मानने से इंकार कर दिया है। (वल्लाहु आलम)

---

1. ज़ादुल मआद 2/122, (कुछ इज़ाफ़ों के साथ)
2. सहीह बुख़ारी 2/602 वग़ैरह

ये हैं वे सरीए और ग़ज़वे जो ग़ज़वा अह्ज़ाब और बनी क़ुरैज़ा के बाद पेश आए। इनमें से किसी भी सरीए या ग़ज़वे में कोई तेज़ लड़ाई नहीं हुई, सिर्फ़ कुछ-कुछ में मामूली क़िस्म की झड़पें हुईं, इसलिए इन मुहिमों को लड़ाई के बाजए झड़पें, फ़ौजी गश्त और 'सिखाने वाली' गतिविधियां कहा जा सकता है, जिसका मक़्सद ढीठ बद्दुओं और अकड़े हुए दुश्मनों को डराना-धमकाना था। हालात पर विचार करने से मालूम होता है कि ग़ज़वा अह्ज़ाब के बाद स्थिति बदलनी शुरू हो गई थी और इस्लाम दुश्मनों के हौसले टूटते जा रहे थे। अब उन्हें यह उम्मीद बाक़ी न रह गई थी कि इस्लाम की दावत को तोड़ा और उसकी शौकत को पामाल किया जा सकता है, पर यह तब्दीली तनिक अच्छी तरह खुलकर उस वक़्त सामने आई जब मुसलमान हुदैबिया समझौते से फ़ारिग़ हो चुके। यह समझौता असल में इस्लामी ताक़त का मान लेना था और इस बात की पुष्टि थी कि अब इस ताक़त को अरब प्रायद्वीप में बाक़ी और बरक़रार रखने से कोई ताक़त नहीं रोक सकती।

हुदैबिया का समझौता

(ज़ीक़ादा सन् 06 हि०)

हुदैबिया के उमरे की वजह

जब अरब प्रायद्वीप में हालात बड़ी हद तक मुसलमानों के पक्ष में हो गए, तो इस्लामी दावत की कामियाबी और महान विजय के चिह्न धीरे-धीरे प्रकट होने शुरू हुए और मस्जिदे हराम में जिसका दरवाज़ा मुश्रिकों ने मुसलमानों पर छः वर्ष से बन्द कर रखा था, मुसलमानों के लिए इबादत का हक़ मान लिए जाने की प्रस्तावना शुरू हो गई।

अल्लाह के रसूल सल्ल० को मदीना में यह सपना दिखाया गया कि आप और आपके सहाबा किराम मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए। आपने ख़ाना काबा की चाबी ली और सहाबा किराम सहित बैतुल्लाह का तवाफ़ और उमरा किया। फिर कुछ लोगों ने सर के बाल मुंडाए और कुछ ने कटवाने को काफ़ी समझा।

आपने सहाबा किराम रज़ि० को इस सपने की सूचना दी तो उन्हें बड़ी ख़ुशी हुई और उन्होंने यह समझा कि इस साल मक्का में दाख़िला मिलेगा। आपने सहाबा किराम को यह भी बतलाया कि आप उमरा अदा फ़रमाएंगे। इसलिए सहाबा किराम भी सफ़र के लिए तैयार हो गए।

मुसलमानों में रवानगी का एलान

आपने मदीना और आस-पास की आबादियों में यह एलान फ़रमा दिया कि लोग आपके साथ जाएं, लेकिन बहुत से लोगों ने देर की। इधर आपने अपने कपड़े धोए। मदीना पर इब्ने उम्मे मक्तूम या नुमैला लैसी को अपना जानशीं मुक़र्रर फ़रमाया और अपनी क़सवा नामी ऊंटनी पर सवार होकर पहली ज़ीक़ादा सन् 06 हि० को सोमवार को रवाना हो गए। आपके साथ उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० भी थीं। चौदह सौ (और कहा जाता है कि पन्द्रह सौ लोग साथ थे।) आपने मुसाफ़िरों का हथियार यानी म्यान के अन्दर बन्द तलवारों के सिवा और किसी क़िस्म का हथियार नहीं लिया था।

मक्का की ओर मुसलमान चल पड़े

आपका रुख़ मक्का की ओर था। ज़ुल हुलैफ़ा पहुंचकर आप हदयि[1]

---

1. हदयि : वह जानवर जिसे हज व उमरा करने वाले मक्का या मिना में ज़िब्ह करते हैं,

(क़ुरबानी के जानवर) के क़लादे पहनाए, कोहान चीर कर निशान बनाया और उमरे का एहराम बांधा, ताकि लोगों को इत्मीनान रहे कि आप लड़ाई नहीं लड़ेंगे।

आगे-आगे क़बीला ख़ुज़ाआ का एक जासूस भेज दिया, ताकि वह क़ुरैश के इरादों की ख़बर लाए। अस्फ़ान के क़रीब पहुंचे तो उस जासूस ने आकर सूचना दी कि मैं काब बिन लुई को इस हालत में छोड़कर आ रहा हूं कि उन्होंने आपसे मुक़ाबला करने के लिए अहाबीश[1] (मित्र क़बीलों) को जमा कर रखा है और भी जत्थ जुटा लिए हैं और वे आपसे लड़ने और आपको बैतुल्लाह से रोकने का संकल्प किए हुए हैं।

इस सूचना के मिलने के बाद नबी सल्ल० ने सहाबा किराम रज़ि० से मश्विरा किया और फ़रमाया, क्या आप लोगों की यह राय है कि ये लोग जो क़ुरैश की सहायता पर कमर कसे हुए हैं, हम उनके घरवालों पर टूट पड़ें और क़ब्ज़ा कर लें? इसके बाद अगर वे ख़ामोश बैठते हैं, तो इस हालत में ख़ामोश बैठते हैं कि लड़ाई की मार और दुख और ग़म से दोचार हो चुके हैं और भागते हैं तो वह भी इस हालत में कि अल्लाह एक गरदन काट चुका होगा? या आप लोगों की यह राय है कि हम ख़ाना काबा का रुख़ करें और जो राह में रोक बने, उससे लड़ाई करें?

इस पर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने अर्ज़ किया कि अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं, मगर हम उमरा करने आए हैं, किसी से लड़ने नहीं आए हैं। अलबत्ता जो हमारे और बैतुल्लाह के दर्मियान रोक बनेगा, उससे लड़ाई करेंगे।

जाहिलियत के ज़माने में अरब में चलन था कि हदयि का जानवर अगर भेड़ या बकरी है, तो निशानी के तौर पर गले में क़लादा डाल दिया जाता था और अगर ऊंट है, तो कोहान चीरकर ख़ून पोत दिया जाता था। ऐसे जानवर से कोई व्यक्ति छेड़छाड़ न करता था। शरीअत ने इस चलन को बाक़ी रखा।

1. ये हब्शी लोग नहीं हैं, जबकि शब्द से इसका भास हो सकता है, जबकि बनू कनाना और दूसरे अरब क़बीलों की कुछ शाखाएं हैं। इनका ताल्लुक़ हुबशी पहाड़ से है जो वादी नोमान अराक से नीचे स्थित है। यहां से मक्का का फ़ासला छः मील है। इस पहाड़ के दामन में बनू हारिस बिन अब्दे मनार बिन कनाना, बनू मुस्तलिक़, हय्या बिन साद बिन उमर बनुल हौन बिन ख़ुज़ैमा ने इकट्ठे होकर क़ुरैश को वचन दिया था और सबने मिलकर अल्लाह की क़सम खाई थी कि जब तक रात अंधेरी और दिन रोशन है और हुबशी पहाड़ अपनी जगह बरक़रार है, हम सब दूसरों के ख़िलाफ़ एक साथ होंगे। (मोजमुल बुलदान 2/214, अल मुनमिक़ 275)

नबी सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छा तब चलो। चुनांचे लोगों ने सफ़र जारी रखा।

बैतुल्लाह से मुसलमानों को रोकने की कोशिश

इधर क़ुरैश को अल्लाह के रसूल सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम की रवानगी का पता चला, तो उसने एक मज्लिसे शूरा (सलाहकार परिषद) बनाई और तै किया कि जैसे भी संभव हो, मुसलमानों को बैतुल्लाह से दूर रखा जाए। चुनांचे जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अहाबीश से कतरा कर अपना सफ़र जारी रखा, तो बनी काब के एक आदमी ने आकर आपको ख़बर दी कि क़ुरैश ने ज़ी तुवा नामी जगह पर पड़ाव डाल रखा है और ख़ालिद बिन वलीद दो सौ सवारों का दस्ता लेकर कुराउल ग़मीम में तैयार खड़े हैं। (कुराउल ग़मीम मक्का जाने वाली केन्द्रीय और कारवानी राजमार्ग पर स्थित है) ख़ालिद ने मुसलमानों को रोकने की भी कोशिश की। चुनांचे उन्होंने अपने सवारों को ऐसी जगह तैनात किया, जहां से दोनों फ़रीक़ एक दूसरे को देख रहे थे।

ख़ालिद ने ज़ुहर की नमाज़ में यह भी देखा कि मुसलमान रुकूअ और सज्दे कर रहे हैं, तो कहने लगे कि ये लोग ग़ाफ़िल थे, हमने हमला कर दिया होता तो इन्हें मार लिया होता। इसके बाद तै किया कि अस्र की नमाज़ में मुसलमानों पर अचानक टूट पड़ेंगे लेकिन अल्लाह ने इसी बीच नमाज़े ख़ौफ़ (लड़ाई की हालत की ख़ास नमाज़) का हुक्म उतार दिया और ख़ालिद के हाथ से मौक़ा जाता रहा।

ख़ूनी टकराव से बचने की कोशिश और रास्ते की तब्दीली

इधर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुराउल ग़मीम का केन्द्रीय मार्ग छोड़कर एक दूसरा पेचदार रास्ता अपनाया जो पहाड़ी घाटियों के बीच से होकर गुज़रता था, यानी आप अपने दाहिनी ओर कतरा कर हम्श के बीच से गुज़रते हुए एक ऐसे रास्ते पर चले, जो सनीयतुल मरार पर निकलता था। सनीयतुल मरार से हुदैबिया में उतरते हैं और हुदैबिया मक्का के निचले हिस्से में स्थित है।

इस रास्ते को अपनाने का फ़ायदा यह हुआ कि कुराउल ग़मीम का वह केन्द्रयी मार्ग जो तनईम से गुज़रकर हरम तक जाता था और जिस पर ख़ालिद बिन वलीद की टुकड़ी तैनात थी, वह बाईं ओर छूट गई। ख़ालिद ने मुसलमानों के धूल को देखकर जब यह महसूस किया कि उन्होंने रास्ता बदल दिया है, तो घोड़े को एड़ लगाई और क़ुरैश को इस नई स्थिति के ख़तरे से आगाह करने के लिए भागम भाग मक्का पहुंचे।

इधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपना सफ़र पहले की

तरह जारी रखा। जब सनीयतुल मरार पहुंचे, तो ऊंटनी बैठ गई। लोगों ने कहा, हल-हल, लेकिन वह बैठी ही रही। लोगों ने कहा, क़सवा अड़ गई है।

आपने फ़रमाया, क़सवा अड़ी नहीं है और न उसकी यह आदत है, लेकिन उसे उस हस्ती ने रोक रखा है, जिसने हाथी को रोक दिया था। फिर आपने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, ये लोग किसी भी ऐसे मामले की मांग नहीं करेंगे, जिसमें अल्लाह की हुरमतों का आदर कर रहे हों, लेकिन मैं उसे ज़रूर मान लूंगा। इसके बाद आपने ऊंटनी को डांटा तो वह उछल कर खड़ी हो गई। फिर आपने रास्ते में थोड़ी सी तब्दीली की और हुदैबिया के पास एक चश्मे पर उतरे, जिसमें थोड़ा-सा पानी था और उसे लोग ज़रा-ज़रा सा ले रहे थे। चुनांचे कुछ ही क्षणों में सारा पानी ख़त्म हो गया। अब लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्ल० से प्यास की शिकायत की। आपने तिरकश से एक तीर निकाला और हुक्म दिया कि चश्मे में डाल दें। लोगों ने ऐसा ही किया। इसके बाद अल्लाह की क़सम! उस चश्मे से बराबर पानी उबलता रहा, यहां तक कि तमाम लोग प्यास बुझा कर वापस हो गए।

बुदैल बिन वरक़ा की मध्यस्थता

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सन्तुष्ट हो चुके, तो बुदैल बिन वरक़ा ख़ुज़ाअी अपने क़बीला ख़ुज़ाआ के कुछ लोगों के साथ हाज़िर हुआ। तिहामा के निवासियों में यही क़बीला (ख़ुज़ाआ) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हितैषी था।

बुदैल ने कहा, मैं काब बिन लुई को देखकर आ रहा हूं कि वे हुदैबिया के काफ़ी पानी पर पड़ाव डाले हुए हैं। उनके साथ औरतें और बच्चे भी हैं। वे आपसे लड़ने और आपको बैतुल्लाह से रोकने का तहैया किए हुए हैं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हम किसी से लड़ने नहीं आए हैं। क़ुरैश को लड़ाइयों ने तोड़ डाला है और बहुत नुक़्सान पहुंचाया है, इसलिए अगर वे चाहें, तो उनसे एक मुद्दत तै कर लूं और वे मेरे और लोगों के बीच से हट जाएं और अगर वे चाहें तो जिस चीज़ में लोग दाख़िल हुए हैं, उसमें वे भी दाख़िल हो जाएं, वरना उनको राहत तो हासिल ही रहेगी।

और अगर उन्हें लड़ाई के सिवा कुछ मंज़ूर नहीं, तो उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं अपने दीन के मामले में उनसे उस वक़्त तक लड़ता रहूंगा, जब तक कि मेरी गरदन अलग न हो जाए या जब तक अल्लाह

अपना फ़ैसला लागू न कर दे।

बुदैल ने कहा, आप जो कुछ कर रहे हैं, मैं उसे क़ुरैश तक पहुंचा दूंगा। इसके बाद वह क़ुरैश के पास पहुंचा और बोला, मैं उन साहब के पास से आ रहा हूं। मैंने उनसे एक बात सुनी है, अगर चाहो तो पेश कर दूं।

इस पर मूर्खों ने कहा, हमें कोई ज़रूरत नहीं कि तुम हमसे उनकी कोई बातचीत करो, लेकिन जो लोग सूझ-बूझ रखते थे, उन्होंने कहा, लाओ सुनाओ, तुमने क्या सुना है?

बुदैल ने कहा, मैंने उन्हें यह और यह बात कहते सुना है। इस पर क़ुरैश ने मिक्रज़ बिन हफ़्स को भेजा, उसे देखकर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, यह बद-अह्द आदमी है।

चुनांचे जब उसने आपके पास आकर बातें कीं, तो आपने उससे वही बात कही जो बुदैल और उसके साथियों से कही थी। उसने वापस पलट कर क़ुरैश को पूरी बात बता दी।

क़ुरैश के दूत

इसके बाद हुलैस बिन अलक़मा नामी बनू कनाना के एक आदमी ने कहा, मुझे इनके पास जाने दो।

लोगों ने कहा, जाओ, जब वह आया, तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा से फ़रमाया, यह फ़्लां आदमी है। यह ऐसी क़ौम से ताल्लुक़ रखता है, जो क़ुरबानी के जानवरों का बहुत आदर करती है। इसलिए जानवरों को खड़ा कर दो।

सहाबा ने जानवरों को खड़ा कर दिया और ख़ुद भी लब्बैक पुकारते हुए उसका स्वागत किया।

उस व्यक्ति ने यह स्थिति देखी, तो कहा, सुब्हानल्लाह! इन लोगों को बैतुल्लाह से रोकना कदापि मुनासिब नहीं और वहीं से अपने साथियों के पास वापस पलट गया और बोला, मैंने क़ुरबानी के जानवर देखे हैं, जिनके गलों में क़लादे (बन्धन) हैं और जिनकी कोहानें चिरी हुई हैं। इसलिए मैं मुनासिब नहीं समझता कि उन्हें बैतुल्लाह से रोका जाए। इस पर क़ुरैश और उस व्यक्ति में कुछ ऐसी बातें हुईं कि वह ताव में आ गया।

इस मौक़े पर उर्वः बिन मसऊद सक़फ़ी ने हस्तक्षेप किया और बोला, उस व्यक्ति (मुहम्मद सल्ल०) ने तुम्हारे सामने एक अच्छा प्रस्ताव रखा है, इसलिए

उसे क़ुबूल कर लो और मुझे उनके पास जाने दो।

लोगों ने कहा, जाओ।

चुनांचे वह आपके पास हाज़िर हुआ और बातें शुरू कीं। नबी सल्ल० ने उससे भी वही बात कही जो बुदैल से कही थी।

इस पर उर्व: ने कहा, ऐ मुहम्मद ! यह बताइए कि अगर आपने किसी क़ौम का सफ़ाया भी कर दिया तो क्या अपने आपसे पहले किसी अरब के बारे में सुना है कि उसने अपनी क़ौम का सफ़ाया कर दिया हो और अगर दूसरी स्थिति हुई, तो ख़ुदा की क़सम ! मैं ऐसे चेहरे और ऐसे गुंडे लोगों को देख रहा हूं जो इसी क़ाबिल हैं कि आपको छोड़कर भाग जाएं।

इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा, लात के गुप्तांग का लटकता हुआ चमड़ा चूस। हम हुज़ूर सल्ल० को छोड़कर भागेंगे ?

उर्व: ने कहा, यह कौन है ?

लोगों ने कहा, अबूबक्र हैं।

इस पर हज़रत अबूबक्र रज़ि० को सम्बोधित करके कहा, देखो, उस ज़ात की क़सम ! जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर ऐसी बात न होती कि तुमने मुझ पर एक एहसान किया था और मैंने उसका बदला नहीं दिया है, तो मैं यक़ीनन तुम्हारी इस बात का जवाब देता।

इसके बाद उर्व: फिर नबी सल्ल० से बातें करने लगा। वह जब बातें करता, तो आपकी दाढ़ी पकड़ लेता। मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० नबी सल्ल० के पास ही खड़े थे, हाथ में तलवार थी और सर पर ख़ूद।

उर्व: जब नबी सल्ल० की दाढ़ी पर हाथ बढ़ाता तो वह तलवार के मुठ से उसके हाथ पर मारते और कहते कि अपना हाथ नबी सल्ल० की दाढ़ी से परे रख। आख़िर उर्व: ने अपना सर उठाया और बोला, यह कौन है ?

लोगों ने कहा, मुग़ीरह बिन शोबा हैं। इस पर उसने कहा, ओ बद-अह्द ! क्या मैं तेरी बद-अह्दी के सिलसिले में दौड़-धूप नहीं कर रहा हूं ?

घटना इस तरह घटी थी कि अज्ञानता-काल में हज़रत मुग़ीरह कुछ लोगों के साथ थे, फिर उन्हें क़त्ल करके उनका माल ले भागे थे और आकर मुसलमान हो गए थे। इस पर नबी सल्ल० ने फ़रमाया था कि मैं इस्लाम तो क़ुबूल कर लेता हूं, लेकिन माल से मेरा कोई ताल्लुक़ नहीं। (इस मामले में उर्व: के दौड़-धूप की वजह यह थी कि हज़रत मुग़ीरह रज़ि० उसके भतीजे थे।)

इसके बाद उर्व: नबी सल्ल० के साथ सहाबा किराम के गहरे ताल्लुक़ और

उनकी श्रद्धा को देखने लगे। फिर अपने साथियों के पास वापस आया और बोला, ऐ क़ौम ! ख़ुदा की क़सम ! मैं क़ैसर व किसरा और नजाशी जैसे बादशाहों के पास जा चुका हूं। ख़ुदा की क़सम ! मैंने किसी बादशाह को नहीं देखा कि उसके साथी उसका इतना आदर करते हों, जितनी मुहम्मद के साथी मुहम्मद का आदर करते हैं। ख़ुदा की क़सम ! वह खंखार भी थूकते थे तो किसी न किसी आदमी के हाथ पर पड़ता था और वह व्यक्ति उसे अपने चेहरे और जिस्म पर मल लेता था और जब वह कोई हुक्म देते थे तो उसे पूरा करने के लिए सब दौड़ पड़ते थे और जब वुज़ू करते थे तो मालूम होता था कि उनके वुज़ू के पानी के लिए लोग लड़ पड़ेंगे ? और जब कोई बात बोलते थे, तो सब अपनी आवाज़ें पस्त कर लेते थे और अति आदर की वजह से उन्हें भरपूर नज़र से न देखते थे और उन्होंने तुम पर एक अच्छा प्रस्ताव पेश किया है, इसलिए उसे मान लो।

वही है जिसने उनके हाथ तुमसे रोके

जब क़ुरैश के जोशीले और लड़ने-भिड़ने वाले नवजवानों ने देखा कि उनके बड़े लोग समझौता करना चाहते हैं, तो उन्होंने समझौते में रुकावट डालने का प्रोग्राम बनाया और यह तै किया कि रात में यहां से निकलकर चुपके से मुसलमानों के कैम्प में घुस जाएं और ऐसा हंगामा मचाएं कि लड़ाई की आग भड़क उठे।

फिर उन्होंने इस प्रोग्राम को लागू करने के लिए अमली क़दम भी उठया। चुनांचे रात के अंधेरे में सत्तर या अस्सी नवजवानों ने जबले तनओम से उतरकर मुसलमानों के कैम्प में चुपके से घुसने की कोशिश की, लेकिन इस्लामी पहरेदारों के कमांडर मुहम्मद बिन मस्लमा ने इन सबको गिरफ़्तार कर लिया, फिर नबी सल्ल० ने समझौते के लिए इन सबको माफ़ करते हुए आज़ाद कर दिया। इसी के बारे में अल्लाह का यह इर्शाद आया—

'वही है, जिसने बत्ने मक्का में उनके हाथ तुमसे रोके और तुम्हारे हाथ उनसे रोके, इसके बाद कि तुमको उन पर क़ाबू दे चुका था।' (48 : 24)

हज़रत उस्मान रज़ि० दूत बनाकर भेजे गए

अब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सोचा कि एक दूत रवाना फ़रमाएं, जो क़ुरैश के सामने सविस्तार आपके ताज़ा सफ़र के उद्देश्य को स्पष्ट कर दे। इस काम के लिए आपने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को बुलाया, लेकिन उन्होंने यह कहते हुए विवशता दिखाई कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! अगर मुझे

कष्ट दिया गया तो मक्का में बनी काब का एक व्यक्ति भी ऐसा नहीं जो मेरे समर्थन में बिगड़ सकता हो। आप हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान को भेज दें। उनका कुंबा-क़बीला मक्का में ही है। वह आपका पैग़ाम अच्छी तरह पहुंचा देंगे।

आपने हज़रत उस्मान रज़ि० को बुलाया और क़ुरैश के पास रवानगी का हुक्म देते हुए फ़रमाया, इन्हें बतला दो कि हम लड़ने नहीं आए हैं, उमरा करने आए हैं। इन्हें इस्लाम की दावत भी दो। आपने हज़रत उस्मान को यह हुक्म भी दिया कि वह मक्का में ईमान वाले मर्दों और औरतों के पास जाकर उन्हें विजय की शुभ-सूचना सुना दें और यह बतला दें कि अल्लाह अब अपने दीन को मक्का में जाहिर व ग़ालिब करने वाला है, यहां तक कि ईमान की वजह से किसी को यहां छिपे रहने की ज़रूरत न होगी।

हज़रत उस्मान रज़ि० आपका पैग़ाम लेकर रवाना हुए। बलदह नामी जगह पर क़ुरैश के पास से गुज़रे, तो उन्होंने पूछा, कहां का इरादा है?

फ़रमाया, मुझे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने यह और यह पैग़ाम देकर भेजा है।

क़ुरैश ने कहा, हमने आपकी बात सुन ली। आप अपने काम पर जाइए।

इधर सईद बिन आस ने उठकर हज़रत उस्मान को धन्यवाद दिया और अपने घोड़े पर ज़ीन कसकर आपको सवार किया और साथ बिठाकर अपनी पनाह में मक्का ले गया। वहां जाकर हज़रत उस्मान रज़ि० क़ुरैश के सरदारों को अल्लाह के रसूल सल्ल० का सन्देश सुनाया। इससे छूटे तो क़ुरैश ने कहा कि आप बैतुल्लाह का तवाफ़ कर लें, मगर आपने इसे ठुकरा दिया और यह गवारा न किया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० के तवाफ़ करने से पहले ख़ुद तवाफ़ कर लें।

हज़रत उस्मान रज़ि० की शहादत की अफ़वाह और बैअते रिज़्वान

हज़रत उस्मान रज़ि० अपना काम पूरा कर चुके थे, लेकिन क़ुरैश ने उन्हें अपने पास रोक लिया। शायद वे चाहते थे कि स्थिति से निमटने के लिए कोई फाइनल फ़ैसला कर लें और हज़रत उस्मान रज़ि० को उनके लाए हुए पैग़ाम का जवाब देकर वापस करें, मगर हज़रत उस्मान रज़ि० के देर तक रुके रहने की वजह से मुसलमानों में यह अफ़वाह फैल गई कि उन्हें क़त्ल कर दिया गया है।

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० को इसकी ख़बर हुई तो आपने फ़रमाया कि हम इस जगह से टल नहीं सकते, यहां तक कि लोगों से लड़ लें। फिर आपने सहाबा किराम को बैअत की दावत दी। सहाबा किराम रज़ि० टूट पड़े और इस बात पर बैअत की कि लड़ाई का मैदान छोड़कर भाग नहीं सकते। एक जमाअत

ने मौत पर बैअत की, यानी मर जाएंगे, पर लड़ाई का मैदान न छोड़ेंगे।

सबसे पहले अबू सनान असदी ने बैअत की। हज़रत सलमा बिन अकवअ ने तीन बार बैअत की, शुरू मे, बीच में और आख़िर में। रसूलुल्लाह सल्ल० ने ख़ुद अपना हाथ पकड़ कर फ़रमाया, यह उस्मान का हाथ है।

फिर जब बैअत पूरी हो चुकी, तो हज़रत उस्मान रज़ि० भी आ गए और उन्होंने भी बैअत की। इस बैअत में सिर्फ़ एक आदमी ने जो मुनाफ़िक़ था, शिर्कत नहीं की। उसका नाम जद बिन क़ैस था।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने यह बैअत एक पेड़ के नीचे ली। हज़रत उमर रज़ि० मुबारक हाथ थामे हुए थे और हज़रत माक़ल बिन यसार रज़ि० ने पेड़ की कुछ टहनियां पकड़ कर रसूलुल्लाह सल्ल० के ऊपर से हटा रखी थीं। इसी बैअत का नाम बैअते रिज़्वान है और इसी के बारे में अल्लाह ने यह आयत उतारी है—

'अल्लाह ईमान वालों से राज़ी हुआ, जबकि वे पेड़ के नीचे बैअत कर रहे थे।' (48 : 18)

समझौता और समझौते की धाराएं

बहरहाल क़ुरैश ने स्थिति की विकटता महसूस कर ली, इसलिए झट सुहैल बिन अम्र को समझौते के मामलों को तै करने के लिए रवाना किया और यह ताकीद कर दी कि समझौते में ज़रूर ही यह बात तै की जाए कि आप इस साल वापस चले जाएं। ऐसा न हो कि अरब यह कहें कि आप हमारे शहर में ज़बरदस्ती दाख़िल हो गए।

इन हिदायतों को लेकर सुहैल बिन अम्र आपके पास हाज़िर हुआ। नबी सल्ल० ने उसे आता देखकर सहाबा किराम से फ़रमाया, तुम्हारा काम तुम्हारे लिए आसान कर दिया। इस आदमी को भेजने का मतलब ही यह है कि क़ुरैश समझौता चाहते हैं।

सुहैल ने आपके पास पहुंचकर देर तक बातें की और आख़िरकार दोनों तरफ़ से समझौते की धाराएं तै हो गईं, जो ये थीं—

1. अल्लाह के रसूल सल्ल० इस साल मक्का में दाख़िल हुए बिना वापस जाएंगे, अगले साल मुसलमान मक्का आएंगे और तीन दिन ठहरेंगे। उनके साथ सवार का हथियार होगा, म्यानों में तलवारें होंगी और उनसे किसी क़िस्म की छेड़खानी न की जाएगी।

2. दस साल तक दोनों फ़रीक़ लड़ाई बन्द रखेंगे। इस मुद्दत में लोग अम्न

से रहेंगे, कोई किसी पर हाथ नहीं उठाएगा।

3. जो मुहम्मद के अह्द व पैमान में दाख़िल होना चाहे, दाख़िल हो सकेगा और जो क़ुरैश के अह्द व पैमान में दाख़िल होना चाहे, दाख़िल हो सकेगा, जो क़बीला जिस फ़रीक़ में शामिल होगा, उस फ़रीक़ का एक हिस्सा समझा जाएगा, इसलिए ऐसे किसी क़बीले पर ज़्यादती हुई, तो ख़ुद उस फ़रीक़ पर ज़्यादती समझी जाएगी।

4. क़ुरैश का जो आदमी अपने सरपरस्त की इजाज़त के बिना, यानी भागकर—मुहम्मद के पास जाएगा, मुहम्मद उसे वापस कर देंगे, लेकिन मुहम्मद के साथियों में से जो आदमी शरण लेने के लिए भाग कर क़ुरैश के पास आएगा, क़ुरैश उसे वापस न करेंगे।

इसके बाद आपने हज़रत अली रज़ि० को बुलाया कि लेख लिख दें और यह इमला कराया 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

इस पर सुहैल ने कहा, हम नहीं जानते रहमान क्या है? आप यों लिखिए, 'बिस्मिल्लाहुम-म' (ऐ अल्लाह ! तेरे नाम से)

नबी सल्ल० ने हज़रत अली रज़ि० को हुक्म दिया कि यही लिखो। इसके बाद आपने यह इमला कराया, 'यह वह बात है जिस पर मुहम्मद रसूलुल्लाह ने समझौता किया।'

इस पर सुहैल ने कहा, अगर हम यह जानते कि आप अल्लाह के रसूल हैं, तो फिर न तो हम आपको बैतुल्लाह से रोकते और न लड़ते, लेकिन आप मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिखवाइए।

आपने फ़रमाया, मैं अल्लाह का रसूल हूं चाहे तुम झुठलाते रहो। फिर हज़रत अली रज़ि० को हुक्म दिया कि मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह लिखें और शब्द 'अल्लाह के रसूल' मिटा दें, लेकिन हज़रत अली ने गवारा न किया कि शब्द को मिटाएं। इसलिए नबी सल्ल० ने ख़ुद अपने हाथ से मिटा दिया। इसके बाद पूरी दस्तावेज़ लिखी गई।

फिर जब समझौता पूरा हो गया, तो बनू ख़ुज़ाआ रसूलुल्लाह सल्ल० के अह्द व पैमान में दाख़िल हो गए। ये लोग असल में अब्दुल मुत्तलिब के ज़माने ही से बनू हाशिम के मित्र थे, जैसा कि किताब के शुरू में ही गुज़र चुका है। इसलिए इस अह्द व पैमान में दाख़िला असल में उसी पुरानी मिताई की ताकीद थी और उसको पक्का करना था। दूसरी ओर बनू बक्र क़ुरैश के अह्द व पैमान में दाख़िल हो गए।

अबू जन्दल की वापसी

अभी समझौते की दस्तावेज़ तैयार ही हो रही थी कि सुहलै के बेटे अबू जन्दल अपनी बेड़ियां घसीटे आ पहुंचे। वह निचले मक्का से निकलकर आए थे। उन्होंने यहां पहुंचकर अपने आपको मुसलमानों के दर्मियान डाल दिया। सुहैल ने कहा, यह पहला आदमी है जिसके बारे में मैं आपसे मामला करता हूं कि आप इसे वापस कर दें।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अभी तो हमने लेख पूरा भी नहीं किया है।

उसने कहा, तब मैं आपसे किसी बात पर समझौते का कोई मामला ही न करूंगा।

नबी सल्ल० ने फ़रमाया, अच्छा तो तुम उसको मेरे लिए छोड़ दो।

उसने कहा, मैं आपके लिए भी नहीं छोड़ सकता।

आपने फ़रमाया, नहीं, नहीं, इतना तो कर ही दो।

उसने कहा, नहीं, मैं नहीं कर सकता। फिर सुहैल ने अबू जन्दल के चेहरे पर चांटा रसीद किया और मुश्रिकों की ओर वापस करने के लिए उनके कुरते का गला पकड़ कर घसीटा।

अबू जन्दल ज़ोर-ज़ोर से चीख़कर कहने लगे, मुसलमानो ! क्या मैं मुश्रिकों की ओर वापस किया जाऊंगा कि वे मुझे मेरे दीन के बारे में फ़िल्ने में डालें ?

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अबू जन्दल ! सब्र करो और इसे सवाब की वजह समझो। अल्लाह तुम्हारे लिए और तुम्हारे साथ जो दूसरे कमज़ोर मुसलमान हैं, उन सबके लिए फैलने और पनाह पाने की जगह बनाएगा। हमने क़ुरैश से समझौता कर लिया है और हमने उनको और उन्होंने हमको इस पर अल्लाह का अह्द दे रखा है, इसलिए हम बद-अह्दी नहीं कर सकते।

इसके बाद हज़रत उमर रज़ि० उछल कर अबू जन्दल के पास पहुंचे। वह उनके पहलू में चलते जा रहे थे और कहते जा रहे थे, अबू जन्दल ! सब्र करो। ये लोग मुश्रिक हैं, इनका ख़ून तो बस कुत्ते का ख़ून है ! और साथ ही साथ अपनी तलवार का दस्ता भी उनके क़रीब करते जा रहे थे। हज़रत उमर रज़ि० का बयान है कि मुझे उम्मीद थी कि वह तलवार लेकर अपने बाप (सुहैल) को उड़ा देंगे, लेकिन उन्होंने अपने बाप के बारे में कोताही से काम लिया और समझौता लागू हो गया।

उमरा से हलाल होने के लिए क़ुरबानी और बालों की कटाई

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम समझौता लिखा कर फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया, उठो और अपने-अपने जानवर क़ुरबान कर दो, लेकिन अल्लाह की क़सम ! कोई भी न उठा, यहां तक कि आपने यह बात तीन बार दोहराई, मगर फिर भी कोई न उठा, तो आप उम्मे सलमा रज़ि० के पास गए और लोगों के इस पेश आने वाले तरीक़े का ज़िक्र किया। उम्मुल मोमिनीन ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! क्या आप ऐसा चाहते हैं ? तो फिर आप तशरीफ़ ले जाइए और किसी से कुछ कहे बिना चुपचाप अपना जानवर ज़िब्ह कर दीजिए और अपने नाई को बुलाकर सर मुंडा लीजिए।

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर तशरीफ़ लाए और किसी से कुछ कहे बिना यही किया, यानी अपना क़ुरबानी का जानवर ज़िब्ह कर दिया और नाई को बुलाकर सर मुंडा लिया। जब लोगों ने देखा तो ख़ुद भी अपने-अपने जानवर ज़िब्ह कर दिए और इसके बाद आपस में एक दूसरे का सर मूंडने लगे। हाल यह था कि मालूम होता था कि दुख की वजह से एक दूसरे का क़त्ल कर देंगे। इस मौक़े पर गाय और ऊंट सात-सात आदमियों की ओर से ज़िब्ह किए गए।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू जह्ल का एक ऊंट ज़िब्ह किया, जिसकी नाक में चांदी का एक हलक़ा था। इसका मक़्सद यह था कि मुश्रिक जल-भुनकर रह जाएं। फिर रसूलुल्लाह सल्ल० ने सर मुंडाने वालों के लिए तीन बार मग़्फ़िरत की दुआ की और कैंची से कटाने वालों के लिए एक बार।

इसी सफ़र में अल्लाह ने हज़रत काब बिन उजरा के सिलसिले में यह हुक्म भी उतारा कि जो आदमी पीड़ा की वजह से अपना सर (एहराम की हालत में) मुंडा ले, वह रोज़े या सदक़े या ज़बीहे (क़ुरबानी के जानवर) की शक्ल में फ़िदया दे।

हिजरत करने वाली औरतों की वापसी से इंकार

इसके बाद कुछ मुसलमान औरतें आ गईं। उनके अभिभावकों ने मांग की कि हुदैबिया में जो समझौता पूरा हो चुका है, उसकी रोशनी में उन्हें वापस किया जाए, लेकिन आपने यह मांग इस दलील की बुनियाद पर रद्द कर दी कि इस धारा के बारे में समझौते में जो शब्द लिखा गया था, वह यह था—

'और (यह समझौता इस शर्त पर किया जा रहा है कि) हमारा जो आदमी आपके पास जाएगा आप उसे ज़रूर ही वापस कर देंगे, भले ही वह आप ही के

दीन पर क्यों न हो।'[1]

इसलिए औरतें इस समझौते में सिरे से दाख़िल ही न थीं। फिर अल्लाह ने इसी सिलसिले में यह आयत भी उतारी—

'ऐ ईमान वालो ! जब तुम्हारे पास ईमान वाली औरतें हिजरत करके आएं, तो उनका इम्तिहान लो। अल्लाह उनके ईमान को बेहतर जानता है, पस अगर इन्हें ईमान वाली जान लो तो दुश्मनों को न पलटाओ। न वे दुश्मनों के लिए हलाल हैं और न दुश्मन उनके लिए हलाल हैं। अलबत्ता उनके काफ़िर शौहरों ने जो मह्र उनको दिए थे, उसे वापस दे दो और (फिर) तुम पर कोई हरज नहीं कि उनसे निकाह कर लो, जबकि उन्हें उनके मह्र अदा कर दो और काफ़िर औरतों को अपने निकाह में न रखो।' (60/10)

इस आयत के आने के बाद जब कोई ईमान वाली हिजरत करके आती तो रसूलुल्लाह सल्ल० अल्लाह के इस इर्शाद की रोशनी में उसका इम्तिहान लेते कि—

'(ऐ नबी !) जब तुम्हारे पास ईमान वाली औरतें आएं और इस बात पर बैअत करें कि वह अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक न करेंगी, चोरी न करेंगी, ज़िना न करेंगी, अपनी औलाद को क़त्ल न करेंगी, अपने हाथ-पांव के बीच में कोई बोहतान गढ़ कर न लाएंगी, और किसी भली बात में तुम्हारी नाफ़रमानी न करेंगी, तो उनसे बैअत ले लो और उनके लिए अल्लाह से मग़्फ़िरत की दुआ करो। यक़ीनन अल्लाह माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है।' (60/12)

चुनांचे जो औरतें इस आयत में ज़िक्र की हुई शर्तों की पाबन्दी का वचन देतीं, आप उनसे फ़रमाते कि मैंने तुमसे बैअत कर ली, फिर उन्हें वापस न पलटाते।

इस हुक्म के मुताबिक़ मुसलमानों ने अपनी काफ़िर बीवियों को तलाक़ दे दी, उस वक़्त हज़रत उमर की दो बीवियां थीं जो शिर्क पर क़ायम थीं, आपने उन दोनों को तलाक़ दे दी, फिर एक से मुआविया ने शादी कर ली और दूसरी से सफ़वान बिन उमैया ने।

---

1. सहीह बुख़ारी 1/380

इस समझौते की धाराओं की उपलब्धि

यह है हुदैबिया का समझौता

जो व्यक्ति इसकी धाराओं का उस पृष्ठ भूमि सहित जायज़ा लेगा, उसे कोई शक न रहेगा कि यह मुसलमानों की महान विजय थी, क्योंकि क़ुरैश ने अब तक मुसलमानों का वजूद ही नहीं माना था और वे इन्हें नेस्त व नाबूद करने का तहैया किये बैठे थे। उन्हें इंतिज़ार था कि एक न एक दिन यह ताक़त दम तोड़ देगी।

इसके अलावा क़ुरैश अरब प्रायद्वीप के धार्मिक नेता और दुनिया के अगुवा होने की हैसियत से इस्लामी दावत और आम लोगों के दर्मियान पूरी ताक़त के साथ रोक बने रहने की कोशिशें करते रहते थे। इस पृष्ठभूमि में देखिए तो समझौते की ओर मात्र झुक जाना ही मुसलमानों की ताक़त का मान लिया जाना और इस बात का एलान था कि अब क़ुरैश इस ताक़त को कुचलने की सामर्थ्य नहीं रखते।

फिर तीसरी धारा के पीछे साफ़ तौर पर यह मनोविज्ञान काम करता नज़र आता है कि क़ुरैश की दुनिया वाली चौधराहट और धार्मिक नेतृत्व का जो पद प्राप्त था, उसे उन्होंने बिल्कुल भुला दिया था और अब उन्हें सिर्फ़ अपनी पड़ी थी। उनको इससे कोई सरोकार न था कि बाक़ी लोगों का क्या बनता है, यानी अगर सारे का सारा अरब प्रायद्वीप इस्लाम की गोद में आ जाए, तो क़ुरैश को इसकी कोई परवाह नहीं और वे इसमें किसी तरह का इस्तक्षेप न करेंगे। क्या क़ुरैश के इरादों और उद्देश्यों को देखते हुए यह उनकी ज़बरदस्त हार नहीं है? और मुसलमानों के उद्देश्यों को देखते हुए यह खुली जीत नहीं है? आख़िर इस्लाम वालों और इस्लाम विरोधियों के बीच जो ख़ूनी लड़ाइयां हुई थीं, उनका मंशा और मक़्सद इसके सिवा और क्या था कि अक़ीदे और दीन के बारे में लोगों को पूरी आज़ादी मिल जाए। यानी अपनी आज़ाद मर्ज़ी से जो व्यक्ति चाहे मुसलमान हो और जो चाहे काफ़िर रहे। कोई ताक़त उनकी मर्ज़ी और इरादे के सामने रोड़ा बनकर खड़ी न हो। मुसलमानों का यह मक़्सद तो हरगिज़ न था कि दुश्मन के माल ज़ब्त किए जाएं, उन्हें मौत के घाट उतारा जाए और उन्हें ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया जाए, यानी मुसलमानों का अभिप्राय केवल वही था, जिसे अल्लामा इक़बाल ने यों बयान किया है—

शहादत है मतलूब व मक़्सूद मोमिन
न माले ग़नीमत, न किशवर कुशाई

आप देख सकते हैं कि इस समझौते के ज़रिए मुसलमानों का ऊपर लिखा मक़्सद अपनी तमाम पहलुओं समेत हासिल हो गया और इस तरह हासिल हो गया कि कभी-कभी लड़ाई में खुली जीत पा लेने के बाद भी नहीं मिल पाता। फिर इस आज़ादी की वजह से मुसलमानों ने दावत व तब्लीग़ के मैदान में बहुत ज़बरदस्त कामियाबी हासिल की। चुनांचे मुसलमान फ़ौजों की तायदाद जो इस समझौते से पहले तीन हज़ार से ज़्यादा कभी न हो सकी थी, वह सिर्फ़ दो साल के भीतर मक्का-विजय के मौक़े पर दस हज़ार हो गई।

धारा 2 भी वास्तव में इस खुली जीत का एक हिस्सा है, क्योंकि लड़ाई की शुरुआत मुसलमानों ने नहीं, बल्कि मुश्रिकों ने की थी। अल्लाह का इर्शाद है—

'पहली बार उन्हीं लोगों ने तुम लोगों से शुरुआत की।'

जहां तक मुसलमानों की जासूसी और फ़ौजी गश्तों का ताल्लुक़ है, तो मुसलमानों का मक़्सूद उनसे सिर्फ़ यह था कि क़ुरैश अपने मूर्खता भरे घमंड से और अल्लाह का रास्ता रोकने से बाज़ आ जाएं, और बराबरी की शर्त पर मामला कर लें यानी हर फ़रीक़ अपनी-अपनी डगर पर चलता रहने के लिए आज़ाद रहे।

अब विचार कीजिए कि दस वर्षीय लड़ाई बन्द रखने का समझौता आख़िर इस घमंड और अल्लाह की राह में रुकावट से बाज़ आने ही का तो वचन है, जो इस बात की दलील है कि लड़ाई का शुरू करने वाला कमज़ोर और मजबूर होकर अपने मक़्सद में नाकाम हो गया।

जहां तक पहली धारा का ताल्लुक़ है, तो यह भी असल में मुसलमानों की नाकामी के बजाए कामियाबी की निशानी है, क्योंकि यह धारा वास्तव में उस पाबन्दी के ख़त्म करने का एलान है, जिसे क़ुरैश ने मुसलमानों पर मस्जिदे हराम में दाख़िले के बारे में लगा रखी थी। अलबत्ता इस धारा में क़ुरैश के लिए भी तसल्ली की इतनी सी बात थी कि वे उस एक साल मुसलमानों को रोकने में सफल रहे, पर ज़ाहिर है यह वक़्ती और बेहैसियत फ़ायदा था।

इसके बाद इस समझौते के सिलसिले में यह पहलू भी ध्यान देने का है कि क़ुरैश ने मुसलमानों को ये तीन रियायतें देकर सिर्फ़ एक रियायत हासिल की, जिसका ज़िक्र धारा 4 में है, लेकिन यह रियायत हददर्जा मामूली और बे-क़ीमत थी और इसमें मुसलमानों का कोई नुक़्सान न था, क्योंकि यह मालूम था कि जब तक मुसलमान रहेगा अल्लाह, रसूल और मदीनतुल इस्लाम से

भाग नहीं सकता। उसके भागने की सिर्फ़ एक ही शक्ल हो सकती है कि वह विधर्मी (मुर्तद) हो जाए, चाहे ज़ाहिर में, चाहे परदे के पीछे से और ज़ाहिर है कि जब मुर्तद हो जाए, तो मुसलमानों को इसकी ज़रूरत नहीं, बल्कि इस्लामी समाज में उसकी मौजूदगी से कहीं बेहतर है कि वह अलग हो जाए और यही वह ख़ास बात है, जिसकी ओर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अपने इस इर्शाद में इशारा फ़रमाया था—

'जो हमें छोड़कर इन मुश्रिकों की ओर भागा, उसे अल्लाह ने दूर (या बर्बाद) कर दिया।'[1]

बाक़ी रहे मक्के के वे निवासी, जो मुसलमान हो चुके थे या मुसलमान होने वाले थे, उनके लिए अगरचे इस समझौते के मुताबिक़ मदीना में शरण लेने की गुंजाइश न थी, लेकिन अल्लाह की ज़मीन तो बहरहाल फैली हुई थी। क्या हब्शा की ज़मीन ने ऐसे नाज़ुक वक़्त में मुसलमानों के लिए अपनी गोद नहीं खोल रखी थी, जबकि मदीना निवासी इस्लाम का नाम भी नहीं जानते थे। इसी तरह आज भी ज़मीन का कोई टुकड़ा मुसलमानों के लिए अपनी गोद खोल सकता था और यही बात थी जिसकी ओर रसूलुल्लाह सल्ल० ने अपने इस इर्शाद में इशारा फ़रमाया था—

'उनका जो आदमी हमारे पास आएगा, अल्लाह उसके लिए फैलाव और निकलने की जगह बना देगा।'[2]

फिर इस क़िस्म के रिज़र्वेशन से अगरचे ज़ाहिर में क़ुरैश ने मान-मर्यादा हासिल कर ली थी, पर सच तो यह है कि यह क़ुरैश की ज़बरदस्त मनोवैज्ञानिक घबराहट, परेशानी, दबाव और मात खाने की निशानी थी। इससे पता चलता है कि उन्हें अपने बुतपरस्त समाज के बारे में बड़ा डर लगा हुआ था और वे महसूस कर रहे थे कि उनका यह समाजी घरौंदा एक खाई के ऐसे खोखले और अन्दर से कटे हुए किनारे पर खड़ा है जो किसी भी दम गिरने वाला है, इसलिए उसकी हिफ़ाज़त के लिए इस तरह के रिजर्वेशन का हासिल कर लेना ज़रूरी है।

दूसरी ओर रसूलुल्लाह सल्ल० ने जिस खुले दिल से यह शर्त मंज़ूर की कि क़ुरैश के यहां पनाह लेने वाले किसी मुसलमान को वापस न तलब करेंगे वह इस बात की दलील है कि आपको अपने समाज के जमाव और पक्केपन पर पूरा-पूरा

---

1. सहीह मुस्लिम, बाब सुलहे हुदैबिया 2/105
2. सहीह मुस्लिम, 2/105

भरोसा था और इस क़िस्म की शर्त आपके लिए क़तई तौर पर किसी अंदेशे की वजह न थी।

मुसलमानों का ग़म

यह है समझौते की धाराओं की हक़ीक़त, लेकिन इन धाराओं में दो बातें देखने में ऐसी थीं कि इनकी वजह से मुसलमानों को बड़ा दुख हुआ। एक यह कि आपने बताया था कि आप बैतुल्लाह तशरीफ़ ले जाएंगे और उसका तवाफ़ करेंगे, लेकिन आप तवाफ़ किए बिना वापस हो रहे थे। दूसरे यह कि आप अल्लाह के रसूल हैं और हक़ पर हैं और अल्लाह ने अपने दीन को ग़ालिब करने का वायदा कर रखा है, फिर क्या वजह है कि आपने क़ुरैश का दबाव क़ुबूल किया और दबकर समझौता किया?

ये दोनों बातें तरह-तरह के सन्देह और गुमान पैदा कर रही थीं। इधर मुसलमानों के एहसास इतने चुटीले थे कि वे समझौते की धाराओं की गहराइयों और नतीजों पर ग़ौर करने के बजाए दुख और मलाल के बोझ तले दबे हुए थे और शायद सबसे ज़्यादा ग़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को था। चुनांचे उन्होंने प्यारे नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल०! क्या हम लोग हक़ पर और वे लोग बातिल पर नहीं हैं?

आपने फ़रमाया, क्यों नहीं?

उन्होंने कहा, क्या हमारे मारे गए लोग जन्नत में और उनके मारे गए लोग जहन्नम में नहीं हैं?

आपने फ़रमाया, क्यों नहीं?

उन्होंने कहा, तो फिर क्यों हम अपने दीन के बारे में दबाव क़ुबूल करें और ऐसी हालत में पलटें कि अभी अल्लाह ने हमारे और उनके दर्मियान फ़ैसला नहीं किया है?

आपने फ़रमाया, ख़त्ताब के बेटे! मैं अल्लाह का रसूल हूं और उसकी नाफ़रमानी नहीं कर सकता। वह मेरी मदद करेगा और मुझे हरगिज़ बर्बाद न करेगा।

उन्होंने कहा, क्या आपने हमसे यह बयान नहीं किया था कि आप बैतुल्लाह के पास तशरीफ़ ले जाएंगे और उसका तवाफ़ करेंगे?

आपने फ़रमाया, क्यों नहीं? लेकिन क्या मैंने यह भी कहा था कि हम इसी साल आएंगे?

उन्होंने कहा, नहीं।

आपने फ़रमाया, तो बहरहाल तुम बैतुल्लाह के पास आओगे और उसका तवाफ़ करोगे।

इसके बाद हज़रत उमर रज़ि०. ग़ुस्से में बिफरे हुए हज़रत अबूबक्र रज़ि० के पास पहुंचे और उनसे भी वही बातें कहीं जो अल्लाह के रसूल सल्ल० से कही थीं और उन्होंने भी ठीक वही जवाब दिया जो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने दिया था और आख़िर में इतना और बढ़ा दिया कि आप दामन थामे रहो, यहां तक कि मौत आ जाए, क्योंकि ख़ुदा की क़सम, आप हक़ पर हैं।

इसके बाद 'इन्ना फ़-तहना ल-क फ़त्हम मुबीना०' की आयतें उतरीं, जिनमें इस समझौते को खुली जीत कहा गया है। ये आयतें उतरीं तो रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० को बुलाया और पढ़कर सुनाया, वह कहने लगे, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह जीत है?

फ़रमाया, हां, इससे उनके दिल को सुकून हुआ और वापस चले गए।

बाद में हज़रत उमर रज़ि० को अपनी ग़लती का एहसास हुआ, तो बड़े शर्मिंदा हुए। ख़ुद उनका बयान है कि मैंने उस दिन जो ग़लती की थी और जो बात कह दी थी, उससे डरकर मैंने बहुत से अमल किए, बराबर सदक़ा व ख़ैरात करता रहा, रोज़े रखता और नमाज़ पढ़ता रहा और ग़ुलाम आज़ाद करता रहा, यहां तक कि अब जाकर मुझे भलाई की उम्मीद है।[1]

कमज़ोर मुसलमानों का मसला हल हो गया

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना वापस तशरीफ़ लाकर सन्तुष्ट हो चुके तो एक मुसलमान, जिसे मक्के में पीड़ा दी जा रही थी, छूटकर भाग आया। उनका नाम अबू बसीर था। वह क़बीला सक़ीफ़ से ताल्लुक़ रखते थे और क़ुरैश के मित्र थे। क़ुरैश ने उनकी वापसी के लिए जो आदमी भेजे और यह कहलवाया कि हमारे और आपके दर्मियान जो अह्द व क़रार है, उसे पूरा कीजिए। नबी सल्ल० के अबू बसीर को उन दोनों के हवाले कर दिया।

ये दोनों उन्हें साथ लेकर रवाना हुए और ज़ुलहुलैफ़ा पहुंचकर उतरे और

1. हुदैबिया समझौते के स्रोत ये हैं, फ़त्हुल बारी 7/439-458, सहीह बुख़ारी 1/378-381, 2/598, 600, 717, सहीह मुस्लिम 2/104-105, 106, इब्ने हिशाम 2/308-322 ज़ादुल मआद 2/122-127, तारीख़ उमर बिन ख़त्ताब, लेख इब्ने जौज़ी, पृ० 39-40

खजूर खाने लगे। अबू बसीर ने एक व्यक्ति से कहा, ऐ फ़्लां! ख़ुदा की क़सम! मैं देखता हूं कि तुम्हारी यह तलवार बहुत अच्छी है।

उस व्यक्ति ने उसे म्यान से निकालकर कहा, हां, हां, अल्लाह की क़सम, यह बहुत अच्छी है। मैंने इसका बहुत बार तजुर्बा किया है।

अबू बसीर ने कहा, तनिक मुझे दिखाओ, मैं भी देखूं।

उस व्यक्ति ने अबू बसीर को तलवार दे दी और अबू बसीर ने तलवार लेते ही उसे मारकर ढेर कर दिया।

दूसरा व्यक्ति भागकर मदीना आया और दौड़ता हुआ मस्जिदे नबवी में घुस गया। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उसे देखकर फ़रमाया, इसने खतरा किया है।

वह व्यक्ति नबी सल्ल० के पास पहुंचकर बोला, मेरा साथी, ख़ुदा क़ी क़सम! क़त्ल कर दिया गया और मैं भी क़त्ल ही किया जाने वाला हूं। इतने में अबू बसीर आ गए और बोले, ऐ अल्लाह के रसूल! अल्लाह ने आपका वायदा पूरा कर दिया। आपने मुझे उनकी ओर पलटा दिया, फिर अल्लाह ने मुझे उनसे नजात दे दी।

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, उसकी मां की बर्बादी हो। उसे कोई साथी मिल जाए तो यह लड़ाई की आग भड़का देगा। यह बात सुनकर अबू बसीर समझ गए कि अब उन्हें फिर काफ़िरों के हवाले किया जाने वाला है, इसलिए वह मदीना से निकलकर समुद्र तट पर आ गए।

उधर अबू जन्दल बिन सुहैल भी छूट भागे और अबू बसीर से आ मिले। अब क़ुरैश का जो आदमी भी इस्लाम लाकर भागता, वह अबू बसीर से आ मिलता, यहां तक कि उनकी एक जमाअत इकट्ठा हो गई।

इसके बाद इन लोगों को शामदेश आने-जाने वाले किसी भी क़ुरैशी क़ाफ़िले का पता चलता तो वे उससे ज़रूर छेड़छाड़ करते और क़ाफ़िले वालों को मारकर उनका माल लूट लेते। क़ुरैश ने तंग आकर नबी सल्ल० को अल्लाह और रिश्तेदारी का वास्ता देते हुए यह पैग़ाम दिया कि आप इन्हें अपने पास बुला लें और अब जो भी आपके पास आएगा, पनाह में रहेगा। इसके बाद नबी सल्ल० ने उन्हें बुला लिया और वे मदीना आ गए।[1]

---

1. पिछले स्रोत ही देखें।

क़ुरैश के बड़ों का इस्लाम अपनाना

इस समझौते के बाद सन् 07 हि० के शुरू में हज़रत अम्र बिन आस, ख़ालिद बिन वलीद और उस्मान बिन तलहा रज़ि० मुसलमान हो गए। जब ये लोग नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने फ़रमाया, मक्का ने अपने सपूतों को हमारे हवाले कर दिया है।[1]

---

1. इस बारे में बड़ा मतभेद है कि ये सहाबा किराम किस सन् में इस्लाम लाए। अस्माउर्रिजाल की आम किताबों में इसे सन् 08 की घटना कहा गया है, लेकिन नजाशी के पास हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० के इस्लाम लाने की घटना मशहूर घटना है जो सन् 07 हि० की है और यह भी मालूम है कि हज़रत ख़ालिद और उस्मान बिन तलहा उस वक़्त मुसलमान हुए थे जब हज़रत अम्र बिन आस हब्शा से वापस आए थे, क्योंकि उन्होंने हब्शा से वापस आकर मदीने का इरादा किया तो रास्ते में इन दोनों से मुलाक़ात हुई और तीनों ने एक साथ नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर इस्लाम क़ुबूल किया। इसका मतलब यह है कि ये सभी लोग सन् 07 हि० के शुरू में मुसलमान हुए। (अल्लाह बेहतर जानता है)

दूसरा मरहला

नई तब्दीली

हुदैबिया का समझौता, असल में इस्लाम और मुसलमानों की ज़िंदगी में एक नई तब्दीली की शुरुआत थी, चूंकि इस्लाम की दुश्मनी में क़ुरैश सबसे ज़्यादा मज़बूत, हठधर्म और लड़ाका क़ौम की हैसियत रखते थे, इसलिए जब वे लड़ाई के मैदान में पसपा होकर अम्न व सलामती की ओर आ गए तो लड़ने वालों के तीन बाजुओं, क़ुरैश, ग़तफ़ान और यहूदी—में से सबसे मज़बूत बाज़ू टूट गया और चूंकि क़ुरैश ही पूरे अरब प्रायद्वीप में बुतपरस्ती के नुमाइन्दे और सरदार थे, इसलिए लड़ाई के मैदान से उनके हटते ही पुतपरस्तों की भावनाएं ठंडी पड़ गई और उनकी दुश्मनी भरे रवैए में बड़ी हद तक तब्दीली आ गई। चुनांचे हम देखते हैं कि इस समझौते के बाद ग़तफ़ान की ओर से भी किसी भी बड़ी कोशिश और शोर-शराबा का प्रदर्शन नहीं हुआ, बल्कि उन्होंने कुछ किया भी तो यहूदियों के भड़काने पर।

जहां तक यहूदियों का ताल्लुक़ है तो ये यसरिब से निकाले जाने के बाद ख़ैबर को अपनी चालों और षड्यंत्रों का अड्डा बना चुके थे, वहां उनके शैतान अंडे-बच्चे दे रहे थे और फ़िले की आग भड़काने में लगे हुए थे। वे मदीना के आस-पास बद्दुओं को भड़काते रहते थे और नबी सल्ल० और मुसलमानों के ख़ात्मे या कम से कम उन्हें बड़े पैमाने पर पीड़ा पहुंचाने की तदबीरें सोचते रहते थे, इसलिए हुदैबिया के समझौते के बाद नबी सल्ल० ने सबसे पहला फ़ैसला करने वाला जो क़दम उठाया वह इसी फ़िले और फ़साद के केन्द्र के ख़िलाफ़ किया।

बहरहाल शान्ति के इस मरहले पर जो हुदैबिया के समझौते के बाद शुरू हुआ था, मुसलमानों को इस्लामी दावत फैलाने और प्रचार करने का अहम मौक़ा हाथ आ गया था, इसलिए इस मैदान में उनकी गतिविधियां तेज़ से तेज़तर हो गईं जो लड़ाई की सरगर्मियों पर छाई रहीं, इसलिए मुनासिब होगा कि इस दौर की दो क़िस्में की जाएं—

1. तब्लीग़ी (प्रचार संबंधी) सरगर्मियां और बादशाहों और सरदारों के नाम पत्र,

2. जंगी सरगर्मियां (सामरिक गतिविधियां)

फिर अनुचित न होगा कि इस मरहले की जंगी सरगर्मियां पेश करने से पहले बादशाहों और सरदारों के नाम पत्रों का विवरण दे दिया जाए, क्योंकि स्वाभाविक रूप से इस्लाम दावत में प्रथम है, बल्कि यही वह मक़्सद है जिसके लिए मुसलमानों ने तरह-तरह की परेशानियों और मुसीबतों, लड़ाई और फ़िल्ने, हंगामे और कुढ़न सहन किए थे।

बादशाहों और सरदारों के नाम पत्र

सन् 06 हि० के अन्त में जब अल्लाह के रसूल सल्ल० हुदैबिया से तशरीफ़ लाए, तो आपने अलग-अलग बादशाहों के नाम पत्र लिखकर उन्हें इस्लाम की दावत दी।

आपने इन पत्रों के लिखने का इरादा फ़रमाया तो आपसे कहा गया कि बादशाह उसी शक्ल में पत्र स्वीकार करेंगे जब उन पर मुहर लगी हो, इसलिए नबी सल्ल० ने चांदी की अंगूठी बनवाई जिस पर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लिखा हुआ था। यह लिखावट तीन लाइनों में थी। मुहम्मद एक लाइन में, रसूल एक लाइन में और अल्लाह एक लाइन में, ऊपर नीचे तीन लाइनें।[1]

फिर आपने जानकारी रखने वाले अनुभवी सहाबा रज़ि० को क़ासिद (दूत) के रूप में चुना और उन्हें बादशाहों के पास पत्र देकर रवाना फ़रमाया।

अल्लामा मंसूरपुरी ने पूरे विश्वास के साथ लिखा है कि आपने ये दूत अपने ख़ैबर कूच करने से कुछ दिन पहले पहली मुहर्रम सन् 07 हि० को भेजे थे।[2] आगे की पंक्तियों में ये पत्र और उनके कुछ प्रभावों को लिखा जा रहा है।

1. नजाशी शाह हब्श के नाम पत्र

इस नजाशी का नाम अस्हमा बिन अबजर था। नबी सल्ल० ने उसके नाम जो पत्र लिखा उसे अम्र बिन उमैया ज़ुमरी के हाथों सन् 06 हि० के आख़िर या सन् 07 हि० के शुरू में रवाना फ़रमाया—

तबरी ने इस पत्र का उल्लेख किया है, लेकिन उसे ग़ौर से देखने से अन्दाज़ा होता है कि यह वह पत्र नहीं है, जिसे रसूलुल्लाह सल्ल० ने हुदैबिया समझौते के बाद लिखा था, बल्कि शायद यह उस पत्र का हिस्सा है जिसे आपने मक्की दौर में हज़रत जाफ़र को उनकी हब्शा की हिजरत के वक़्त दिया था, क्योंकि पत्र के अन्त में उन मुहाजिरों का उल्लेख इन शब्दों में किया गया है—

'मैंने तुम्हारे पास अपने चचेरे भाई जाफ़र को मुसलमानों की एक जमाअत के साथ भेजा है। जब वे तुम्हारे पास पहुंचें तो उन्हें अपने पसा ठहराना और जब्र न अपनाना।'

---

1. सहीह बुख़ारी 2/872-873
2. रहमतुल लिल आलमीन 1/171

बैहक़ी ने इब्ने अब्बास रज़ि० से एक और पत्र का लिखा जाना नक़ल किया है, जिसे नबी सल्ल० ने नजाशी के पास रवाना किया था। उसका अनुवाद यह है—

'यह पत्र है मुहम्मद नबी की ओर से नजाशी असहम शाह हब्श के नाम

उस पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, उसने न कोई बीवी अपनाई, न लड़का (और मैं इसकी भी गवाही देता हूं कि) मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं और मैं तुम्हें इस्लाम की दावत देता हूं, क्योंकि मैं उसका रसूल हूं, इसलिए इस्लाम लाओ, सलामत रहोगे। 'ऐ अहले किताब! एक ऐसी बात की तरफ़ आओ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान बराबर है कि हम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत न करें, उसके साथ किसी को शरीक न ठहराएं और हममें से कोई किसी को रब न बनाए। पस अगर वे मुंह मोड़ें तो कह दो कि गवाह रहो, हम मुसलमान हैं।' अगर तुमने (यह दावत) क़ुबूल न की तो तुम पर अपनी क़ौम के नसारा का गुनाह है।'[1]

डा० हमीदुल्लाह साहब (पेरिस) ने एक और पत्र को नक़ल किया है जो निकट अतीत में मिला है और सिर्फ़ एक शब्द के अन्तर के साथ यही पत्र अल्लामा इब्ने क़य्यिम की पुस्तक 'ज़ादुल मआद' में भी मौजूद है। डाक्टर साहब ने उस पत्र की जांच-पड़ताल में बड़ी मेहनत की है, आज की जांच-पद्धति का फ़ायदा उठाया है और उस पत्र का फोटो भी पुस्तक में छाप दिया है।

उस पत्र का अनुवाद इस तरह है—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से महान नजाशी हब्शा के नाम

उस व्यक्ति पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे। इसके बाद मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का गुणगान करता हूं, जिसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, जो क़ुद्दूस (अति पवित्र) और सलाम (सुख-शान्ति वाला) है, अम्न देनेवाला, रक्षक और निगरां है और मैं गवाही देता हूं कि ईसा बिन मरयम अल्लाह की रूह हैं और उसका कलिमा हैं। अल्लाह ने उन्हें पाकीज़ा, और पाकदामन मरयम बतूल की तरफ़ डाल दिया और उसकी रूह और फूंक से मरयम ईसा के लिए गर्भवती हुई। जैसे अल्लाह ने आदम को अपने हाथ से पैदा किया। मैं एक अल्लाह की ओर और उसकी इताअत पर एक दूसरे की मदद की ओर दावत देता हूं और

---

1. दलाइलुन्नुबूवः, बैहक़ी 2/308, मुस्तदरक हाकिम 2/623

इस बात की ओर (बुलाता हूं) कि तुम मेरी पैरवी करो और जो कुछ मेरे पास आया है, उस पर ईमान लाओ, क्योंकि अल्लाह का रसूल हूं और मैं तुम्हें और तुम्हारी फ़ौज को अल्लाह की ओर बुलाता हूं और मैंने तब्लीग़ और नसीहत कर दी, इसलिए मेरी नसीहत क़ुबूल करो और उस व्यक्ति पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे।'[1]

डाक्टर हमीदुल्लाह साहब ने बड़े विश्वास के साथ कहा है कि यही वह पत्र है जिसे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हुदैबिया के बाद नजाशी के पास रवाना फ़रमाया था, जहां तक इस पत्र की प्रामाणिकता का प्रश्न है, तो दलीलों पर नज़र डालने के बाद उसके सही होने में कोई सन्देह नहीं रहता, लेकिन इस बात की कोई दलील नहीं है कि नबी सल्ल० ने हुदैबिया के बाद यही पत्र भेजा था, बल्कि बैहक़ी ने जो पत्र इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत से नक़ल किया है, उसकी शैली उन पत्रों से ज़्यादा मिलती-जुलती है, जिन्हें नबी सल्ल० ने हुदैबिया के बाद ईसाई बादशाहों और सरदारों के पास रवाना फ़रमाया था, क्योंकि जिस तरह आपने इन पत्रों से आयत 'या अह्लल-किताबि तआलौ इला कलिमतिन सवाइम बैनना. . . .' नक़ल किया था, उसी तरह बैहक़ी के नक़ल किए हुए इस पत्र में यह आयत लिखी हुई है। इसके अलावा इस पत्र में स्पष्ट रूप से असहमा का नाम भी मौजूद है, जबकि डा० हमीदुल्लाह साहब के नक़ल किए हुए पत्र में किसी का नाम नहीं है, इसलिए मेरा विचार है कि डाक्टर साहब का नक़ल किया हुआ वास्तव में वह पत्र है जिसे अल्लाह के रसूल सल्ल० ने अस्हमा के देहान्त के बाद उसके उत्तराधिकारी के नाम लिखा था और शायद यही वजह है कि इसमें कोई नाम नहीं लिखा है।

इस क्रम की मेरे पास कोई दलील नहीं है, बल्कि इसकी बुनियाद केवल वे अन्दरूनी गवाहियां हैं जो इन पत्रों में मिल जाती हैं, अलबत्ता डाक्टर हमीदुल्लाह साहब पर ताज्जुब है कि उन्होंने इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत से बैहक़ी के नक़ल किए हुए पूरे पत्र को पूरे विश्वास के साथ नबी सल्ल० का वह पत्र कहा है जो आपने अस्हमा की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी के नाम लिखा था। हालांकि इस पत्र में स्पष्ट रूप से अस्हमा का नाम मौजूद है। (ज्ञान तो अल्लाह का है)[2]

---

1. देखिए रसूले अकरम सल्ल० की सियासी ज़िंदगी, लेख, डा० हमीदुल्लाह साहब पृ० 108, 109, 122, 123, 124, 125 'ज़ादुल मआद' में अन्तिम वाक्य 'वस्सलामु अला मनित्तबअिल' के बजाए 'अस्लिम अन-त' है, देखिए ज़ादुल मआद 3/60
2. देखिए डा० हमीदुल्लाह साहब की किताब 'हुज़ूरे अकरम की सियासी ज़िंदगी', पृ० 108-114, 121-131

बहरहाल जब अम्र बिन उमैया ज़ुमरी रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी सल्ल० का पत्र नजाशी के हवाले किया, तो नजाशी ने उसे लेकर आंख पर रखा और तख़्त से धरती पर उतर आया और हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब के हाथ पर इस्लाम क़ुबूल किया और नबी सल्ल के पास इस बारे में पत्र लिखा, जो यह है—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद रसूलुल्लाह की ख़िदमत में नजाशी असहमा की ओर से

ऐ अल्लाह नबी आप पर अल्लाह की ओर से सलाम और उसकी रहमत और बरकत हो, वह अल्लाह जिसके सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं। इसके बाद—

ऐ अल्लाह के रसूल ! मुझे आपका मान्य पत्र मिला। जिसमें आपने ईसा का मामले का ज़िक्र किया है, आसमान व ज़मीन के ख़ुदा क़ी क़सम ! आपने जो कुछ लिखा है, हज़रत ईसा उससे एक तिनका ज़्यादा न थे। वह वैसे हैं जैसे आपने ज़िक्र फ़रमाया है।[1] फिर जो कुछ हमारे पास भेजा है, हमने उसे जाना, और आपके चचेरे भाई और आपके सहाबा की मेहमानदारी की और मैं गवाही देता हूं कि आप अल्लाह के सच्चे और पक्के रसूल हैं और मैंने आपसे बैअत की और आपके चचेरे भाई से बैअत की और उनके हाथ पर अल्लाह रब्बुल आलमीन के लिए इस्लाम क़ुबूल किया।[2]

नबी सल्ल० ने नजाशी से यह भी कहा था कि वह हज़रत जाफ़र और हब्शा के दूसरे मुहाजिरों को रवाना कर दे। चुनांचे उसने हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी के साथ दो नावों में उनकी रवानगी का इन्तिज़ाम कर दिया। एक नाव के सवार जिसमें हज़रत जाफ़र और हज़रत अबू मूसा अशअरी और कुछ दूसरे सहाबा रज़ि० थे, सीधे ख़ैबर पहुंचकर नबी सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुए और दूसरी नाव के सवार जिनमें ज़्यादातर बाल-बच्चे थे, सीधे मदीना पहुंचे।[3]

उसी नजाशी ने तबूक की लड़ाई के बाद रजब सन् 09 हि० में वफ़ात पाई। नबी सल्ल० ने उसकी वफ़ात ही के दिन सहाबा किराम रज़ि० को उसके मरने की सूचना दी और उस पर ग़ायबाना नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।

उसकी वफ़ात के बाद दूसरा बादशाह उसका उत्तराधिकारी होकर राज-

---

1. हज़रत ईसा के बारे में ये वाक्य डा० हमीदुल्लाह साहब की इस राय की ताईद करते हैं कि उनका लिखा ख़त असहमा के नाम था।
2. ज़ादुल मआद 3/61
3. इब्ने हिशाम 2/359 वग़ैरह

सिंहासन पर बैठा, तो नबी सल्ल० ने उसके पास भी एक ख़त भेजा, लेकिन यह न मालूम हो सका कि उसने इस्लाम क़ुबूल किया या नहीं।[1]

2. मुक़ौक़िस, शाह मिस्र के नाम पत्र

नबी सल्ल० ने एक पत्र जुरैज बिन मत्ता[2] के नाम भेजा, जिसका लक़ब (उपाधि) मुक़ौक़िस था और जो मिस्र और स्कन्दरिया का बादशाह था। पत्र इस प्रकार है—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल मुहम्मद की ओर से मुक़ौकिस अज़ीम क़िब्त की ओर, उस पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे। इसके बाद—

मैं तुम्हें इस्लाम की दावत देता हूं, इस्लाम लाओ, सलामत रहोगे और इस्लाम लाओ, अल्लाह तुम्हें दोहरा अज्र देगा, लेकिन अगर तुमने मुंह मोड़ा तो तुम पर क़िब्त वालों का भी गुनाह होगा। ऐ क़िब्त वालो ! एक ऐसी बात की तरफ़ आओ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान बराबर है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत करें और उसके साथ किसी चीज़ को न ठहराएं और हममें से कोई किसी को अल्लाह के बजाए रब न बनाए, पस अगर वे मुंह मोड़ें तो कहो कि गवाह रहो कि हम मुसलमान हैं।[3]

इस पत्र को पहुंचाने के लिए हज़रत हातिब बिन अबी बलतआ को चुना गया। यह मुक़ौक़िस के दरबार में पहुंचे तो फ़रमाया, (इस ज़मीन पर) तुमसे पहले एक आदमी गुज़रा है जो अपने आपको सबसे बड़ा 'रब' समझता था। अल्लाह ने उसे आख़िर व अव्वल के लिए सबक़ बना दिया। पहले तो उसके ज़रिए लोगों से बदला लिया, फिर ख़ुद उसको बदले का निशाना बनाया, इसलिए

1. यह बात किसी क़दर सहीह मुस्लिम की रिवायत से ली जा सकती है जो हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत की गई है। (2.99)
2. इस नाम का अल्लामा मंसूरपुरी ने रहमतुल लिल आलमीन 2/178 में उल्लेख किया है। डा० हमीदुल्लाह साहब ने उसका नाम बिन यामीन बताया है। देखिए रसूले अक्रम की सियासी ज़िंदगी, पृ० 141
3. ज़ादुल मआद, लेख, इब्ने क़य्यिम 3/61, निकट अतीत में यह पत्र मिला है। डाक्टर हमीदुल्लाह साहब ने इसका जो फ़ोटो छापा है, उसमें और ज़ादुल मआद के लेख में केवल दो अक्षरों का अन्तर है। ज़ादुल मआद में है 'अस्लिम तुस्लिम अस्लिम यूतिकल्लाहु' (आख़िर तक) और पत्र में फ़-अस्लिम तुस्लिम यूतिकल्लाहु। इसी तरह ज़ादुल मआद में है 'इस्मु अह्लिल क़िब्त' और पत्र में है 'इस्मुल क़िब्ति' देखिए रसूले अक्रम की सियासी ज़िंदगी पृ० 136/137

दूसरे से सबक़ लो, ऐसा न हो कि दूसरे तुमसे सबक़ लें।

मुक़ौक़िस ने कहा, हमारा एक दीन है, जिसे हम छोड़ नहीं सकते, जब तक कि उससे बेहतरीन दीन न मिल जाए।

हज़रत हातिब ने फ़रमाया, हम तुम्हें इस्लाम की दावत देते हैं, जिसे अल्लाह ने तमाम दीन के बदले में काफ़ी बना दिया है। देखो, इस नबी ने लोगों को (इस्लाम) की दावत दी तो उसके ख़िलाफ़ क़ुरैश सबसे ज़्यादा सख़्त साबित हुए। यहूदियों ने सबसे बढ़कर दुश्मनी की और ईसाई सबसे ज़्यादा क़रीब हैं। मेरी उम्र की क़समे! जिस तरह हज़रत मूसा ने हज़रत ईसा के लिए भविष्यवाणी की थी, उसी तरह हज़रत ईसा ने मुहम्मद सल्ल० के लिए भविष्वाणी की है और हम तुम्हें क़ुरआन मजीद की दावत इसी तरह देते हैं, जैसे तुम तौरात वालों को इंजील की दावत देते हो। जो नबी जिस क़ौम को पा जाता है, वह क़ौम उसकी उम्मत हो जाती है और उस पर ज़रूरी हो जाता है कि वह उस नबी की पैरवी करे और उसकी बात माने और तुमने इस नबी का दौर पा लिया है और फिर तुम्हें दीने मसीह से रोकते नहीं हैं, बल्कि हम तो उसी का हुक्म देते हैं।

मुक़ौक़िस ने कहा, मैंने इस नबी के मामले पर विचार किया, तो मैंने पाया कि वह किसी नापसन्दीदा बात का हुक्म नहीं देते और किसी पसन्दीदा बात से मना नहीं करते। वह न गुमराह जादूगर हैं और न झूठे काहिन, बल्कि मैं देखता हूं कि उनके साथ नुबूवत की यह निशानी है कि वह छिपे को निकालते और कानाफूसी की ख़बर देते हैं। मैं और आगे विचार करूंगा।

मुक़ौक़िस ने नबी सल्ल० का पत्र लेकर (आदर के साथ) हाथी दांत की एक डिबिया में रख दिया और मुहर लगाकर अपनी एक लौंडी के हवाले कर दिया। फिर अरबी लिखने वाले एक कातिब (लिखने वाले) को बुलाकर रसूलुल्लाह सल्ल० की सेवा में नीचे का पत्र लिखवाया—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के लिए मुक़ौक़िस अज़ीम क़िब्त की ओर से

आप पर सलाम, इसके बाद—

मैंने आपका पत्र पढ़ा और उसमें आपकी ज़िक्र की हुई बात और दावत को समझा। मुझे मालूम है कि अभी एक नबी का आना बाक़ी है। मैं समझता था वह शाम (सीरिया) से ज़ाहिर होगा। मैंने आपके दूत का सम्मान किया और आपकी ख़िदमत में दो लौंडियां भेज रहा हूं। जिन्हें क़िब्तियों में बड़ा दर्जा मिला हुआ है और कपड़े भेज रहा हूं और आपकी सवारी के लिए एक ख़च्चर भी भेंट कर रहा हूं। और आप पर सलाम।

मुक़ौक़िस ने इस पर कोई बढ़ोत्तरी नहीं की और इस्लाम नहीं लाया। दोनों लौंडियां मारिया और सीरीन थीं। ख़च्चर का नाम दुलदुल था, जो हज़रत मुआविया के समय तक बाक़ी रहा।[1]

नबी सल्ल० ने मारिया को अपने पास रखा और उनके पेट से नबी सल्ल० के साहबज़ादे (सुपुत्र) इब्राहीम पैदा हुए और सीरीन को हज़रत हस्सान बिन साबित अंसारी रज़ि० के हवाले कर दिया।

3. शाह फ़ारस ख़ुसरू परवेज़ के नाम पत्र

नबी सल्ल० ने एक पत्र बादशाह फ़ारस किसरा (खुसरो) के पास भेजा, जो यह था—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद रसूलुल्लाह की तरफ़ से किसरा अज़ीम फारस की ओर

उस आदमी पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए और गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं। वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं और मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं। मैं तुम्हें अल्लाह की ओर बुलाता हूं, क्योंकि मैं तमाम इंसानों की ओर अल्लाह का भेजा हुआ हूं, ताकि जो आदमी ज़िंदा है, उसे बुरे अंजाम से डराया जाए और काफ़िरों पर हक़ बात साबित हो जाए (यानी हुज्जत पूरी हो जाए) पस तुम इस्लाम लाओ, सालिम (सुरक्षित) रहोगे और अगर इससे इंकार किया तो तुम पर मजूस के गुनाह का बोझ भी होगा।'

इस पत्र को ले जाने के लिए आपने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी रज़ियल्लाहु अन्हु को चुना। उन्होंने यह पत्र बहरैन के अधिकारी को दिया। अब यह मालूम नहीं कि बहरैन के अधिकारी ने यह पत्र अपने किसी आदमी के ज़रिए किसरा के पास भेजा या ख़ुद हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सहमी को रवाना किया। बहरहाल जब यह ख़त किसरा को पढ़कर सुनाया गया, तो उसने चाक कर दिया और घमंड में चूर होकर बोला, 'मेरी जनता में से एक तुच्छ दास अपना नाम मुझसे पहले लिखता है।'

रसूलुल्लाह सल्ल० को इस बात की ख़बर हुई, तो आपने फ़रमाया, 'अल्लाह उसकी बादशाही के टुकड़े-टुकड़े करे' और फ़िर वही हुआ जो आपने फ़रमाया था।

चुनांचे इसके बाद किसरा ने अपने यमन के गवर्नर बाज़ान को लिखा कि

1. ज़ादुल मआद 3/61

यह आदमी जो हिजाज़ में है, उसके यहां अपने दो मज़बूत और तन्दुरुस्त आदमी भेज दो कि वे उसे मेरे पास हाज़िर करें।

बाज़ान ने उसे पूरा करते हुए दो आदमी चुने एक उसका क़हरमान बानवीह जो गणितज्ञ था और फ़ारसी में लिखता था। दूसरा ख़ुसरो, यह भी फ़ारसी था।[1] और उन्हें एक पत्र देकर रसूलुल्लाह सल्ल० के पास रवाना किया, जिसमें आपको यह हुक्म दिया गया था कि उनके साथ किसरा के पास हाज़िर हो जाएं।

जब वे मदीना पहुंचे और नबी सल्ल० के सामने हाज़िर हुए तो एक ने कहा, शहंशाह किसरा ने शाह बाज़ान के एक पत्र के ज़रिए हुक्म दिया है कि वह आपके पास एक आदमी भेजकर आपको किसरा के सामने हाज़िर करे और बाज़ान ने इस काम के लिए मुझे आपके पास भेजा है कि आप मेरे साथ चलें। साथ ही दोनों ने धमकी भरी बातें भी कहीं। आपने उन्हें हुक्म दिया कि कल मुलाक़ात करें।

इधर ठीक उसी वक़्त जबकि मदीना में यह दिलचस्प 'मुहिम' चल रही थी, ख़ुद ख़ुसरो परवेज़ के घराने के अन्दर उसके ख़िलाफ़ एक ज़बरदस्त बग़ावत का शोला भड़क रहा था, जिसके नतीजे में क़ैसर की फ़ौज के हाथों फ़ौजों की बराबर मिलने वाली हार के बाद अब ख़ुसरो का बेटा शेरवैह अपने बाप को क़त्ल करके ख़ुद बादशाह बन बैठा था। यह मंगल की रात 10 जुमादल ऊला सन् 07 हि० की घटना है।[2]

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस घटना का पता वह्य के ज़रिए चला, चुनांचे जब सुबह हुई और दोनों फ़ारसी नुमाइन्दे हाज़िर हुए, तो आपने उन्हें इस घटना की ख़बर दी। उन दोनों ने कहा, कुछ होश है, आप क्या कह रहे हैं? हमने इससे बहुत मामूली बात भी आपके अपराधों में गिन ली है, तो क्या हम आपकी यह बात बादशाह को लिख भेजें?

आपने फ़रमाया, हां, उसे मेरी बात की ख़बर कर दो और उससे यह भी कह दो कि मेरा दीन और मेरी हुकूमत वहां तक पहुंचकर रहेगी, जहां तक किसरा पहुंच चुका है, बल्कि इससे भी आगे बढ़ते हुए उस जगह जाकर रुकेगी जिससे आगे ऊंट और घोड़े के क़दम जा ही नहीं सकते। तुम दोनों उससे यह भी कह देना कि अगर तुम मुसलमान हो जाओ, तो जो कुछ तुम्हारे आधीन है, वह सब मैं तुम्हें दे दूंगा और तुम्हें तुम्हारी क़ौम का बादशाह बना दूंगा।

---

1. तारीख़े इब्ने ख़ल्लदून 2/37
2. फ़त्हुल बारी 8/127, तारीख़ इब्ने ख़ल्लदून 2/37

इसके बाद वे दोनों मदीना से चलकर बाज़ान के पास पहुंचे और उसे तमाम बातें बताईं। थोड़े दिनों बाद एक पत्र आया कि शरवैह ने अपने बाप को क़त्ल कर दिया है। शेरवैह ने अपने पत्र में यह भी हिदायत की थी कि जिस व्यक्ति के बारे में मेरे बाप ने तुम्हें लिखा था, उसे दूसरा आदेश आने तक छेड़ना मत।

इस घटना की वजह से बाज़ान और उसके फ़ारसी साथी (जो यमन में मौजूद थे) मुसलमान हो गए।[1]

4. क़ैसर शाहे रूम के नाम पत्र

सहीह बुख़ारी की एक लम्बी हदीस में उस पत्र का मूल पाठ लिखा हुआ है जिसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिरक़्ल शाहे रूम के पास रवाना फ़रमाया था, वह पत्र इस तरह है—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल मुहम्मद की ओर से हिरक़्ल अज़ीम रूम के नाम

उस व्यक्ति पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे, तुम इस्लाम लाओ सालिम रहोगे। इस्लाम लाओ अल्लाह तुम्हें तुम्हारा बदला दो बार देगा और अगर तुमने मुंह फेरा तो तुम पर अरीसियों (जनता) का भी गुनाह होगा। ऐ अह्ले किताब! एक ऐसी बात की ओर आओ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान बराबर है कि हम अल्लाह के सिवा किसी और को न पूजें, उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करें और अल्लाह के बजाए हमारा कोई भी व्यक्ति किसी को रब न बनाए। पस अगर लोग रुख़ फेरें तो कह दो कि तुम लोग गवाह रहो, हम मुसलमान हैं।[2]

इस पत्र को पहुंचाने के लिए दिह्या बिन ख़लीफ़ा कलबी का चुनाव हुआ। आपने उन्हें हुक्म दिया कि वह यह पत्र सरबराह बसरी के हवाले कर दें और वह उसे क़ैसर के पास पहुंचा देगा। इसके बाद जो कुछ पेश आया, उसका विवेचन सहीह बुख़ारी में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत में मिलता है। उनका इर्शाद है कि अबू सुफ़ियान बिन हर्ब ने उनसे बयान किया कि हिरक़्ल ने उसको क़ुरैश की एक जमाअत समेत बुलाया। यह जमाअत हुदैबिया समझौते के

---

1. मुहाज़राते ख़ज़री 1/147, फ़त्हुल बारी 8/127, 128, साथ ही देखिए रहमतुल- लिल आलमीन
2. सहीह बुख़ारी 1/4, 5

तहत अल्लाह के रसूल सल्ल० और क़ुरैश के कुफ़्फ़ार के दर्मियान तैशुदा अम्न की मुद्दत में शामदेश को तिजारत के लिए गई हुई थी। ये लोग एलिया (बैतुल मक़्दिस) में उसके पास हाज़िर हुए।[1]

हिरक़्ल ने उन्हें अपने दरबार में बुलाया। उस वक़्त उसके गिर्दा गिर्द रूम के बड़े-बड़े लोग थे। फिर उसने उनको और अपने तर्जुमान को बुलाकर कहा कि यह आदमी जो अपने आपको नबी समझता है, उससे तुम्हारा कौन-सा आदमी सबसे ज़्यादा क़रीब नसबी ताल्लुक रखता है?

अबू सुफ़ियान का बयान है कि मैंने कहा, मैं उसका सबसे ज़्यादा क़रीबी ख़ानदानी आदमी हूं।

हिरक़्ल ने कहा, इसे मेरे क़रीब कर दो और इसके साथियों को भी क़रीब करके उसकी पीठ के पीछे बिठा दो। इसके बाद हिरक़्ल ने अपने तर्जुमान के ज़रिए अबू सुफ़ियान के साथियों से कहा कि मैं इस आदमी से उस आदमी (नबी सल्ल०) के बारे में सवाल करूंगा। अगर यह झूठ बोले तो तुम लोग उसे झुठला देना।

अबू सुफ़ियान कहते हैं कि ख़ुदा की क़सम! अगर झूठ बोलने की बदनामी का डर न होता तो मैं आपके बारे में यक़ीनन झूठ बोलता।

अबू सुफ़ियान कहते हैं, इसके बाद पहला सवाल जो हिरक़्ल ने मुझसे आपके बारे में किया, वह यह था कि तुम लोगों में उसका ख़ानदान कैसा है?

मैंने कहा—वह ऊंचे ख़ानदान वाला है।

हिरक़्ल ने कहा—तो क्या यह बात इससे पहले भी तुममें से किसी ने कही थी?

मैंने कहा—नहीं।

---

1. उस वक़्त क़ैसर इस बात पर अल्लाह का शुक्र बजा लाने के लिए हम्स से एलिया (बैतुल मक़्दिस) गया हुआ था कि अल्लाह ने उसके हाथों फ़ारस वालों को ज़बरदस्त हार दी। (देखिए सहीह मुस्लिम 2/99) विस्तार में यों है कि फ़ारसियों ने ख़ुसरो परवेज़ को क़त्ल करने के बाद रूमियों से उनके क़ब्ज़े के इलाक़ों की वापसी की शर्त पर सुलह कर ली और वह क्रास भी वापस का दिया जिसके बारे में ईसाइयों का अक़ीदा है कि उसी पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को फांसी दी गई थी। क़ैसर इस समझौते के बाद क्रास को असल जगह लगाने और इस खुली जीत पर अल्लाह का शुक्र बजा लाने के लिए 629 ई० यानी सन् 07 हि० में एलिया (बैतुल मक़्दिस) गया था।

हिरक़्ल ने कहा—क्या इसके बाप-दादा में से कोई बादशाह गुज़रा है?

मैंने कहा—नहीं।

हिरक़्ल ने कहा—अच्छा तो बड़े लोगों ने उसकी पैरवी की है या कमज़ोरों ने?

मैंने कहा—बल्कि कमज़ोरों ने।

हिरक़्ल ने कहा—क्या इस दीन में दाख़िल होने के बाद कोई व्यक्ति इस दीन से घबराकर अलग भी हो गया है?

मैंने कहा—नहीं।

हिरक़्ल ने कहा—उसने जो बात कही है, क्या उसे कहने से पहले तुम लोग उसको झूठे के नाम से याद करते थे?

मैंने कहा, नहीं।

हिरक़्ल ने कहा, क्या वह बद-अह्दी भी करता है?

मैंने कहा, नहीं, अलबत्ता हम लोग इस वक़्त उसके साथ समझौते की एक मुद्दत गुज़ार रहे हैं, मालूम नहीं, इसमें वह क्या करेगा?

अबू सुफ़ियान कहते हैं कि इस एक वाक्य के सिवा मुझे और कहीं कुछ घुसेड़ने का कोई मौक़ा न मिला।

हिरक़्ल ने कहा—क्या तुम लोगों ने उससे लड़ाई लड़ी है?

मैंने कहा—जी हां।

हिरक़्ल ने कहा—तो तुम्हारी और उसकी लड़ाई कैसी रही?

मैंने कहा—लड़ाई हमारे और उसके बीच डोल है। वह हमें दुख दे लेता है और हम उसे दुख पहुंचा लेते हैं।

हिरक़्ल ने कहा—वह तुम्हें किन बातों का हुक्म देता है?

मैंने कहा—वह कहता है सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो। तुम्हारे बाप-दादा जो कुछ कहते थे, उसे छोड़ दो और वह हमें नमाज़, सच्चाई, परहेज़गारी, पाकदामनी और रिश्तेदारों के साथ अच्छे बर्ताव का हुक्म देता है।

इसके बाद हिरक़्ल ने अपने तर्जुमान से कहा, तुम इस आदमी (अबू सुफ़ियान) से कहो कि मैंने तुमसे उस व्यक्ति का ख़ानदान पूछा तो तुमने बताया कि वह ऊंचे ख़ानदान का है और क़ायदा यही है कि पैग़म्बर अपनी क़ौम के ऊंचे ख़ानदान में भेजे जाते हैं।

और मैंने मालूम किया कि क्या यह बात इससे पहले भी तो तुममें से किसी

ने कही थी। तुमने बतलाया नहीं। मैं कहता हूं कि अगर यह बात इससे पहले किसी और ने कही होती, तो मैं यह कहता कि यह आदमी एक ऐसी बात की नक़्क़ाली कर रहा है, जो इससे पहले कही जा चुकी है।

और मैंने मालूम किया कि क्या इसके बाप-दादों में कोई बादशाह गुज़रा है, तो तुमने बतलाया कि नहीं। मैं कहता हूं कि अगर उसके बाप-दादों में कोई बादशाह गुज़रा होता तो मैं कहता कि यह व्यक्ति अपने बाप की बादशाही चाहता है।

और मैंने यह मालूम किया कि क्या जो बात उसने कही है, उसे कहने से पहले तुम लोग उसमें झूठ पाते थे? तो तुमने बताया कि नहीं। और मैं अच्छी तरह जानता हूं कि ऐसा नहीं हो सकता कि वह लोगों पर तो झूठ न बोले और अल्लाह पर झूठ बोले।

मैंने यह भी मालूम किया कि बड़े लोग उसकी पैरवी कर रहे हैं या कमज़ोर। तो तुमने बताया कि कमज़ोरों ने उसकी पैरवी की और सच तो यही है कि यही लोग पैग़म्बरों के पैरोकार होते हैं।

मैंने पूछा कि क्या इस दीन में दाख़िल होने के बाद कोई व्यक्ति इससे पलटा भी है? तो तुमने बतलाया कि नहीं और सच तो यह है कि ईमान जब दिलों में घुस जाता है, तो ऐसा ही होता है।

और मैंने मालूम किया कि क्या वह बद-अह्दी भी करता है? तो तुमने बतलाया कि नहीं और पैग़म्बर ऐसे ही होते हैं, वे बद-अह्दी नहीं करते।

मैंने यह भी पूछा कि वह किन बातों का हुक्म देता है? तो तुमने बताया कि वह तुम्हें अल्लाह की इबादत करने और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न ठहराने का हुक्म देता है। बुतपरस्ती से मना करता है और नमाज़, सच्चाई, परहेज़गारी और पाकदामनी का हुक्म देता है।

तो जो कुछ तुमने बताया है, अगर वह सही है, तो यह व्यक्ति बहुत जल्द मेरे इन दोनों क़दमों की जगह का मालिक हो जाएगा। मैं जानता था कि यह नबी आने वाला है, लेकिन मेरा यह गुमान न था कि वह तुममें से होगा। अगर मुझे यक़ीन होता कि मैं उसके पास पहुंच सकूंगा, तो उससे मुलाक़ात की तक्लीफ़ उठाता और अगर उसके पास होता तो उसके दोनों पांव धोता। इसके बाद हिरक़्ल ने रसूलुल्लाह सल्ल० का पत्र मंगाकर पढ़ा। जब पत्र पढ़ चुका तो वहां आवाज़ें उठने लगीं और बड़ा शोर मचा। हिरक़्ल ने हमारे बारे में हुक्म दिया कि हम बाहर कर दिए जाएं। जब हम लोग बाहर लाए गए, तो मैंने अपने साथियों

से कहा, 'अबू कबशा[1] के बेटे का मामला बड़ा जोर पकड़ गया। इससे तो बनू असफ़र (रूमियों)[2] का बादशाह डरता है।' इसके बाद मुझे बराबर यक़ीन रहा कि रसूलुल्लाह सल्ल० का दीन ग़ालिब आकर रहेगा, यहां तक कि इस्लाम मेरे दिल की आवाज़ बन गया।[3]

यह क़ैसर पर नबी सल्ल० के पत्र का वह असर था, जिसके गवाह अबू सुफ़ियान भी थे। इस पत्र का एक असर यह भी हुआ कि क़ैसर ने अल्लाह के रसूल सल्ल० के इस मुबारक पत्र को पहुंचाने वाले यानी दिह्या कलबी रज़ि० को माल और उपहार दिया, लेकिन हज़रत दिह्या ये उपहार लेकर वापस हुए तो हुमा में क़बीला जुज़ाम के कुछ लोगों ने उन पर डाका डालकर सब कुछ लूट लिया।

हज़रत दिह्या मदीना पहुंचे तो अपने घर के बजाए सीधे मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुए और सारी बात कह सुनाई। पूरी बातें सुनकर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा के नेतृत्व में पांच सौ सहाबा किराम की एक जमाअत हुमा भेजी। हज़रत ज़ैद ने क़बीला जुज़ाम पर रात में छापा मारकर उनकी अच्छी-भली तायदाद को क़त्ल कर दिया और उनके जानवरों और औरतों को हांक लाए। जानवरों में एक हज़ार ऊंट और पांच हज़ार बकरियां थीं और क़ैदियों में एक सौ औरतें और बच्चे थे।

चूंकि नबी सल्ल० और क़बीला जुज़ाम में पहले से समझौता चला आ रहा था, इसलिए इस क़बीले के एक सरदार ज़ैद बिन रफ़ाआ जुज़ामी ने झट नबी सल्ल० की सेवा में अपना विरोध नोट कराया। ज़ैद बिन रफ़ाआ उस क़बीले के कुछ और लोगों समेत पहले ही मुसलमान हो चुके थे और जब हज़रत दिह्या पर डाका पड़ा था, तो उनकी मदद भी की थी, इसलिए नबी सल्ल० ने उनका विरोध

---

1. अबू कबशा के बेटे से मुराद नबी सल्ल० की ज़ाते गरामी है। अबू कबशा रजज़ बिन ग़ालिब ख़ुज़ाई की कुन्नियत (उपाधि) है। वह वह्ब बिन अब्दे मुनाफ़ के नाना थे। अबू कबशा मुश्रिक था, शाम गया तो ईसाई हो गया। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुरैश के दीन का विरोध किया और हनीफ़ीया लेकर आए तो आपकी त्रुटि निकालने के लिए उसकी उपमा दी और उसकी तरफ़ जोड़ दिया। (दलाइलुन्नुबूवः, बैहक़ी 1/82, 83, सीरते नबवीया व अबी हातिम, पृ० 44) बहरहाल अबू कबशा अनजाना शब्द है और अरबों का तरीक़ा था कि जब किसी की निन्दा करनी होती तो उसके बाप-दादों में से किसी अनजाने व्यक्ति से उसे जोड़ देते।
2. रूमियों को बनू असफ़र कहा जाता है, क्योंकि रूम के जिस बेटे से रूमियों की नस्ल थी, वह किसी वजह से असफ़र (पीले) की उपाधि से जाना जाने लगा था।
3. सहीह बुख़ारी 1/4, सहीह मुस्लिम 2/79-99

स्वीकार करते हुए माले ग़नीमत और क़ैदी वापस कर दिए।

ग़ज़वे की तारीख़ लिखने वालों ने आम तौर से इस घटना को हुदैबिया समझौते से पहले बताया है, पर यह भारी ग़लती है, क्योंकि क़ैसर के पास जो पत्र भेजा गया, भेजने का यह काम हुदैबिया समझौते के बाद अमल में लाया गया था, इसीलिए अल्लामा इब्ने क़ैयिम ने लिखा है कि यह घटना बेशक हुदैबिया के बाद की है।[1]

5. मुंज़िर बिन सावी के नाम पत्र

नबी सल्ल० ने एक पत्र मुंज़िर बिन सावी, बहरैन के हाकिम के पास लिखकर उसे भी इस्लाम की दावत दी और इस पत्र को हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ि० के हाथों रवाना फ़रमाया। जवाब में मुंज़िर ने रसूलुल्लाह सल्ल० को लिखा—

'ऐ अल्लाह के रसूल! मैंने आपका पत्र बहरैन वालों को पढ़कर सुना दिया। कुछ लोगों ने इस्लाम को मुहब्बत और पाकीज़गी की नज़र से देखा और उसे स्वीकार कर लिया और कुछ ने पसन्द नहीं किया और मेरी ज़मीन में यहूदी और मजूसी भी हैं, इसलिए आप इस बारे में अपना फ़रमान जारी कीजिए। इसके जवाब में रसूलुल्लाह सल्ल० ने यह पत्र लिखा—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से मुंज़िर बिन सावी की तरफ़

तुम पर सलाम हो। मैं तुम्हारी ओर अल्लाह की प्रशंसा करता हूं जिसके सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं।

इसके बाद मैं तुम्हें अल्लाह की याद दिलाता हूं। याद रहे कि जो व्यक्ति भलाई करेगा और भला चाहेगा, वह अपने ही लिए भलाई करेगा और जो व्यक्ति मेरे दूतों की इताअत और उनके हुक्म की पैरवी करे, उसने मेरी इताअत की और जो उनके साथ भला चाहे, उसने मेरा भला चाहा और मेरे दूतों ने तुम्हारी अच्छी तारीफ़ की है और मैंने तुम्हारी क़ौम के बारे में तुम्हारी सिफ़ारिश मान ली है, इसलिए मुसलमान जिस हाल पर ईमान लाए हैं उन्हें उस पर छोड़ दो और मैंने ख़ताकारों को माफ़ कर दिया है, इसलिए उनसे क़ुबूल कर लो और जब तक तुम सुधार का रास्ता अपनाए रहोगे, हम तुम्हें तुम्हारे काम से अलग न करेंगे और जो

1. देखिए ज़ादुल मआद 2/122, टिप्पणी तलक़ीहुल फ़हूम पृ० 29

यहूदी या मजूसी मत पर क़ायम रहे, उस पर जिज़या है।[1]

6. हौज़ा बिन अली, साहिबे यमामा के नाम पत्र

नबी सल्ल० ने हौज़ा बिन अली यमामा के हाकिम के नाम नीचे लिखा पत्र लिखा—

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से हौज़ा बिन अली की तरफ़

उस आदमी पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे। तुम्हें मालूम होना चाहिए कि मेरा दीन ऊंटों और घोड़ों की पहुंच की आख़िरी हद तक ग़ालिब आकर रहेगा, इसलिए इस्लाम लाओ, सालिम (सुरक्षित) रहोगे और तुम्हारे मातहत जो कुछ है, उसे तुम्हारे लिए बरक़रार रखूंगा।'

इस पत्र को पहुंचाने के लिए क़ासिद की हैसियत से सुलैत बिन अम्र आमिरी का चुनाव किया गया, हज़रत सुलैत इस मुहर लगे हुए पत्र को लेकर हौज़ा के पास तशरीफ़ ले गए, तो उसने आपको मेहमान बनाया और मुबारकबाद दी। हज़रत सुलैत ने उसे पत्र पढ़कर सुनाया तो उसने दर्मियानी क़िस्म का जवाब दिया और नबी सल्ल० की सेवा में यह लिखा—

आप जिस चीज़ की दावत देते हैं, उसके बेहतर और अच्छा होने का क्या पूछना और अरब पर मेरा रौब बैठा हुआ है, इसलिए कुछ कारपरदाज़ी मेरे ज़िम्मे करें। मैं आपकी पैरवी करूंगा। उसने हज़रत सुलैत को उपहार भी दिए। उन्हें हिज्र का बना हुआ कपड़ा दिया।

हज़रत सुलैत ये उपहार लेकर नबी सल्ल० की ख़िदमत में वापस आए और सारी बातें सुनाईं। नबी सल्ल० ने उसका पत्र लेकर फ़रमाया, अगर वह ज़मीन का एक टुकड़ा भी मुझसे तलब करेगा, तो मैं उसे न दूंगा। वह ख़ुद भी तबाह होगा और जो कुछ उसके हाथ में है, वह भी तबाह होगा।

फिर जब अल्लाह के रसूल सल्ल० मक्का जीतने के बाद वापस तशरीफ़ लाए, तो हज़रत जिब्रील अलै० ने यह ख़बर दी कि हौज़ा का देहान्त हो चुका है। नबी सल्ल० ने फ़रमाया, सुनो, यमामा में एक झूठा आदमी ज़ाहिर होने वाला

---

1. ज़ादुल मआद 3/61, 62 यह पत्र निकट अतीत में मिला है और डाक्टर हमीदुल्लाह साहब ने इसका फोटा छापा है। ज़ादुल मआद का लिखा और इस फोटो के लिखे में सिर्फ़ एक शब्द का अन्तर है, (यानी फोटो में) ला इला-ह इल्ला हु-व के बजाए ला इला-ह ग़ैरुहू है।

है, जो मेरे बाद क़त्ल किया जाएगा।

एक कहने वाले ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! उसे कौन क़त्ल करेगा?

आपने फ़रमाया, तुम और तुम्हारे साथी, और सचमुच ऐसा ही हुआ।[1]

7. हारिस बिन अबी शिम्र ग़स्सानी, दमिश्क़ के हाकिम के नाम पत्र

नबी सल्ल० ने उसके पास नीचे लिखा पत्र भेजा।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से हारिस बिन अबी शिम्र की ओर

उस आदमी पर सलाम जो हिदायत की पैरवी करे और ईमान लाए और तस्दीक़ करे और मैं तुम्हें दावत देता हूं कि अल्लाह पर ईमान लाओ जो तंहा है और जिसका कोई शरीक नहीं और तुम्हारे लिए तुम्हारी बादशाही बाक़ी रहेगी।

यह पत्र क़बीला असद बिन ख़ुज़ैमा से ताल्लुक़ रखने वाले एक सहाबी हज़रत शुजाअ बिन वह्ब के हाथों रवाना किया गया। जब उन्होंने यह पत्र हारिस के हवाले किया, तो उसने कहा, 'मुझसे मेरी बादशाही कौन छीन सकता है? मैं उस पर धावा बोलने ही वाला हूं।' और वह इस्लाम न लाया,[2] बल्कि क़ैसर से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ लड़ाई की इजाज़त चाही, मगर उसने उसको उसके इरादे से बाज़ रखा, फिर हारिस ने शुजाअ बिन वह्ब को उपहार और ख़र्चा देकर, अच्छाई के साथ वापस कर दिया।

8. शाह अमान के नाम पत्र

नबी सल्ल० ने एक पत्र शाहे अमान जैफ़र और उसके भाई अब्द के नाम लिखा। इन दोनों के पिता का नाम जलन्दी था। पत्र का विषय यह था—

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह की ओर से जलन्दी के दोनों बेटों जैफ़र और अब्द के नाम

उस व्यक्ति पर सलाम, जो हिदायत की पैरवी करे। इसके बाद, मैं तुम दोनों को इस्लाम की दावत देता हूं, इस्लाम लाओ, सलामत रहोगे, क्योंकि मैं तमाम इंसानों की ओर अल्लाह का रसूल हूं, ताकि जो ज़िंदा है, उसे अंजाम के ख़तरे से आगाह कर दूं और काफ़िरों पर क़ौल सही हो जाए। अगर तुम दोनों इस्लाम

1. ज़ादुल मआद 3/63
2. ज़ादुल मआद 3/63, मुहाज़रात तारीख़ुल उम्मुल इस्लामीया, ख़ज़रमी 1/146

का इक़रार कर लोगे, तो तुमही दोनों को अधिकारी और हाकिम बनाऊंगा और अगर तुम दोनों ने इस्लाम का इक़रार करने से बचने की कोशिश की तो तुम्हारी बादशाही ख़त्म हो जाएगी। तुम्हारी ज़मीन पर घोड़ों का धावा होगा और तुम्हारी बादशाही पर मेरी नुबूवत ग़ालिब आ जाएगी।

इस पत्र को ले जाने के लिए दूत की हैसियत से हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० का चुनाव हुआ। उनका बयान है कि मैं रवाना होकर अमान पहुंचा और अब्द से मुलाक़ात की। दोनों भाइयों में यह ज़्यादा दूरदर्शी और नम्र था। मैंने कहा, मैं तुम्हारे पास और तुम्हारे भाई के पास रसूलुल्लाह सल्ल० का दूत बनकर आया हूं।

उसने कहा, मेरा भाई उम्र और बादशाही दोनों में मुझसे बड़ा और मुझसे आगे है। इसलिए मैं तुमको उसके पास पहुंचा देता हूं कि वह तुम्हारा पत्र पढ़ ले। इसके बाद उसने कहा, अच्छा, तुम दावत किस बात की देते हो?

मैंने कहा, हम एक अल्लाह की ओर बुलाते हैं जो तंहा है, जिसका कोई शरीक नहीं और हम कहते हैं कि उसके अलावा जिसकी भी पूजा की जाती है, उसे छोड़ दो और यह गवाही दो कि मुहम्मद अल्लाह के बन्दे और रसूल हैं।

अब्द ने कहा, ऐ अम्र! तुम अपनी क़ौम के सरदार के बेटे हो। बताओ, तुम्हारे बाप ने क्या किया? क्योंकि हमारे लिए उसका तरीक़ा पैरवी के लायक़ होगा?

मैंने कहा, वह तो मुहम्मद सल्ल० पर ईमान लाए बिना वफ़ात पा गए, लेकिन मुझे हसरत है कि काश, उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया होता और आपकी तस्दीक़ की होती। मैं ख़ुद भी उन्हीं की राय पर था, लेकिन अल्लाह ने मुझे इस्लाम की हिदायत दे दी।

अब्द ने कहा, तुमने कब इनकी पैरवी की?

मैंने कहा, अभी जल्द ही।

उसने पूछा, तुम किस जगह इस्लाम लाए?

मैंने कहा, नजाशी के पास और बतलाया कि नजाशी भी मुसलमान हो चुका है।

अब्द ने पूछा, उसकी क़ौम ने उसकी बादशाही का क्या किया?

मैंने कहा, उसे बरक़रार रखा और उसकी पैरवी की।

उसने कहा, धार्मिक गुरुवों और राहिबों ने भी उसकी पैरवी की?

मैंने कहा, हां।

अब्द ने कहा, ऐ अम्र ! देखो, क्या कह रहे हो, क्योंकि आदमी की कोई भी आदत झूठ से ज़्यादा रुसवा करने वाली नहीं।

मैंने कहा, मैं झूठ नहीं कह रहा हूं और न हम इसे हलाल समझते हैं।

अब्द ने कहा, मैं समझता हूं, हिरक़्ल को नजाशी के इस्लाम लाने का पता नहीं।

मैंने कहा, क्यों नहीं ?

अब्द ने कहा, तुम्हें यह बात कैसे मालूम ?

मैंने कहा, नजाशी हिरक़्ल को टैक्स दिया करता था, लेकिन जब उसने इस्लाम क़ुबूल किया और मुहम्मद सल्ल० की तस्दीक़ की, तो बोला, ख़ुदा की क़सम ! अब अगर वह मुझसे एक दिरहम भी मांगेगा, तो मैं न दूंगा और इसकी सूचना हिरक़्ल को हुई तो उसके भाई यनाक़ ने कहा, क्या तुम अपने दास को छोड़ दोगे कि वह तुम्हें टैक्स न दे और तुम्हारे बजाए एक दूसरे आदमी का नया दीन अपना ले ?

हिरक़्ल ने कहा, यह एक आदमी है जिसने एक दीन को पसन्द किया और उसे अपने लिए अपना लिया, अब मैं इसका क्या कर सकता हूं? ख़ुदा की क़सम ! अगर मुझे अपनी बादशाही का लोभ न होता तो मैं भी वही करता जो उसने किया है।

अब्द ने कहा, अम्र ! देखो क्या कह रहे हो ?

मैंने कहा, अल्लाह की क़सम ! मैं तुमसे सच कह रहा हूं।

अब्द ने कहा, अच्छा मुझे बताओ वह किस बात का हुक्म देते हैं और किस चीज़ से मना करते हैं ?

मैंने कहा, अल्लाह की इताअत का हुक्म देते हैं और उसकी नाफ़रमानी से मना करते हैं, नेकी और रिश्तों के जोड़ने का हुक्म देते हैं और ज़ुल्म व ज़्यादती, ज़िनाकारी, शराबनोशी और पत्थर बुत और क्रास की इबादत से मना करते हैं।

अब्द ने कहा, यह कितनी अच्छी बात है जिसकी ओर वह बुलाते हैं। अगर मेरा भाई भी इस बात पर मेरा साथ देता, तो हम लोग सवार होकर (चल पड़ते), यहां तक कि मुहम्मद सल्ल० पर ईमान लाते और उनकी तस्दीक़ करते, लेकिन मेरा भाई अपनी बादशाही का इससे कहीं ज़यादा लोभी है कि उसे छोड़कर किसी का आधीन बन जाए।

मैंने कहा, अगर वह इस्लाम क़ुबूल कर ले तो रसूलुल्लाह उसकी क़ौम पर उसकी बादशाही बाक़ी रखेंगे, अलबत्ता उनके मालदारों से सदक़ा लेकर फ़क़ीरों में बांट देंगे।

अब्द ने कहा, यह तो बड़ी अच्छी बात है। अच्छा बताओ सदक़ा क्या है?

जवाब में मैंने अलग-अलग मालों के अन्दर रसूलुल्लाह के मुक़र्रर किए हुए सदक़ों की तफ़्सील बताई। जब ऊंट की बारी आई तो वह बोला, ऐ अम्र! हमारे इन मवेशियों में से भी सदक़ा लिया जाएगा, जो ख़ुद ही पेड़-पौधे चर लेते हैं।

मैंने कहा, हां।

अब्द ने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं समझता कि मेरी क़ौम अपने देश के फैलाव और तायदाद की ज़्यादती के बावजूद इसको मान लेगी।

हज़रत अम्र बिन आस का बयान है कि मैं उसकी डयोढ़ी में कुछ दिन ठहरा रहा। वह अपने भाई के पास जाकर मेरी सारी बातें बताता रहता था। फिर एक दिन उसने मुझे बुलाया और मैं अन्दर दाख़िल हुआ। दरबानों ने मेरे बाज़ू पकड़ लिए। उसने कहा, छोड़ दो और मुझे छोड़ दिया गया। मैंने बैठना चाहा तो दरबानों ने मुझे बैठने न दिया।

मैंने बादशाह की ओर देखा तो उसने कहा, अपनी बात कहो।

मैंने मुहरबन्द पत्र उसके हवाले कर दिया।

उसने मुहर तोड़कर पत्र पढ़ा। जब पूरा पत्र पढ़ चुका तो अपने भाई के हवाले कर दिया, भाई ने भी उसी तरह पढ़ा, मगर मैंने देखा कि उसका भाई उससे ज़्यादा नर्मदिल है।

बादशाह ने पूछा, मुझे बताओ, क़ुरैश ने क्या रवैया अपनाया है?

मैंने कहा, सब उनके इताअत गुज़ार हो गए हैं। किसी ने दीन से चाव की वजह से और किसी ने तलवार के डर से।

बादशाह ने पूछा, उनके साथ कौन लोग हैं?

मैंने कहा, सारे लोग हैं। उन्होंने पूरे चाव के साथ इस्लाम क़ुबूल कर लिया है और उसे तमाम दूसरी चीज़ों पर तर्जीह दी है। उन्हें अल्लाह की हिदायत और अपनी अक़्ल की रहनुमाई से यह बात मालूम हो गई है कि वे गुमराह थे। अब इस इलाक़े में मैं नहीं जानता कि तुम्हारे सिवा कोई और बाक़ी रह गया है और अगर तुमने इस्लाम क़ुबूल न किया और मुहम्मद की पैरवी न की तो तुम्हें सवार रौंद डालेंगे और तुम्हारी हरियाली का सफ़ाया कर देंगे, इसलिए इस्लाम क़ुबूल कर लो, सलामत रहोगे और अल्लाह के रसूल सल्ल० तुमको तुम्हारी क़ौम का हुक्मरां बना देंगे। तुम पर न सवार दाख़िल होंगे, न पैदल फ़ौजी।

बादशाह ने कहा, मुझे आज छोड़ दो और कल फिर आओ।

इसके बाद मैं उसके भाई के पास वापस आ गया।

उसने कहा, अम्र! मुझे उम्मीद है कि अगर बादशाही का लोभ न छाए तो वह इस्लाम क़ुबूल कर लेगा।

दूसरे दिन बादशाह के पास गया, लेकिन उसने इजाज़त देने से इन्कार कर दिया, इसलिए मैं उसके भाई के पास वापस आ गया और बतलाया, बादशाह तक मेरी पहुंच न हो सकी। भाई ने मुझसे उसके यहां पहुंचा दिया।

उसने कहा, मैंने तुम्हारी दावत पर ग़ौर किया। अगर मैं बादशाही एक ऐसे आदमी के हवाले कर दूं जिसके सवार यहां पहुंचे भी नहीं, तो मैं अरब में सबसे कमज़ोर समझा जाऊंगा और अगर उसके सवार यहां पहुंच आए तो ऐसा रन पड़ेगा कि उन्हें कभी उससे वास्ता न पड़ा होगा।

मैंने कहा, अच्छा, तो कल मैं वापस जा रहा हूं।

जब उसे मेरी वापसी का यक़ीन हो गया, तो उसने भाई से अकेले में बात की और बोला, यह पैग़म्बर जिन पर ग़ालिब आ चुका है, उनके मुक़ाबले में हमारी कोई हैसियत नहीं और उसने जिस किसी के पास भी पैग़ाम भेजा है, उसने दावत क़ुबूल कर ली है, इसलिए दूसरे दिन सुबह ही मुझे बुलवाया गया और बादशाह और उसके भाई दोनों ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया और नबी सल्ल० की तस्दीक़ की और सदक़ा वसूल करने और लोगों के बीच फ़ैसले करने के लिए मुझे आज़ाद छोड़ दिया और जिस किसी ने मेरा विरोध किया, उसके ख़िलाफ़ मेरे मददगार साबित हुए।[1]

इस घटना के विस्तार में जाने के बाद मालूम होता है कि बाक़ी बादशाहों के मुक़ाबले में इन दोनों के पास पत्र विलम्ब से भेजा गया, शायद यह मक्का विजय के बाद की घटना है।

इन पत्रों के ज़रिए नबी सल्ल० ने अपनी दावत इस धरती के ज़्यादातर बादशाहों तक पहुंचा दी और उसके जवाब में कोई ईमान लाया, तो किसी ने कुफ़्र किया, लेकिन इतना ज़रूर हुआ कि कुफ़्र करने वालों की तवज्जोह भी इस ओर हो गई और उनके नज़दीक आपका दीन और आपका नाम एक जानी-पहचानी चीज़ बन गया।

---

1. ज़ादुल मआद 3/62, 66

हुदैबिया समझौते के बाद की सैनिक गतिविधियां

ग़ज़वा ग़ाबा या ग़ज़वा ज़ी क़िरद

यह ग़ज़वा वास्तव में बनू फ़ज़ारा की एक टुकड़ी का, जिसने अल्लाह के रसूल सल्ल० के मवेशियों पर डाका डाला था, पीछा करने पर आधारित है।

हुदैबिया के बाद और ख़ैबर से पहले यह पहला और अकेला ग़ज़वा है जो अल्लाह के रसूल सल्ल० को पेश आया। इमाम बुख़ारी ने इसका 'बाब' बांधते हुए बताया है कि यह ख़ैबर से सिर्फ़ तीन दिन पहले पेश आया था और यही बात इस ग़ज़वे के ख़ास कर्त्ता-धर्त्ता हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ि० से भी रिवायत की गई है, उनकी रिवायत सही मुस्लिम में देखी जा सकती है। ग़ज़वा के आम माहिरों का कहना है कि यह घटना हुदैबिया समझौते से पहले की है, लेकिन जो बात सहीह में बयान की गई है, माहिरों के बयान के मुक़ाबले में वही ज़्यादा सही है।[1]

इस ग़ज़वे के हीरो हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ि० से जो रिवायतें रिवायत की गई हैं, उनका सार यह है कि नबी सल्ल० ने अपनी सवारी के ऊंट अपने दास रिबाह के साथ चरने के लिए भेजे थे और मैं भी अबू तलहा के घोड़े समेत उनके साथ था कि अचानक बहुत सुबह अब्दुर्रहमान फ़ज़ारी ने ऊंटों पर छापा मारा और उन सबको हांक ले गया और चरवाहे को क़त्ल कर दिया।

मैंने कहा, रिबाह! यह घोड़ा लो, इसे अबू तलहा तक पहुंचा दो और रसूलुल्लाह सल्ल० को ख़बर कर दो और ख़ुद मैंने एक टीले पर खड़े होकर मदीना की तरफ़ रुख़ किया और तीन बार पुकार लगाई, या सबाहाह! हाय सुबह का हमला। फिर मैं हमलावरों के पीछे चल निकला। उन पर तीर बरसाता जाता था और यह पद पढ़ता जाता था—

---

1. देखिए सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा ज़ाते क़िरद 2/603, सहीह मुस्लिम, बाब ग़ज़वा ज़ीक़िरद वग़ैरह, 2/113, 114, 115, फ़त्हुल बारी 7/460, 461, 462, ज़ादुल मआद, 2/120, हुदैबिया से इस लड़ाई के पीछे चले जाने पर हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० की एक और हदीस भी दलील के तौर पर सामने आती है। देखिए मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाबुत्तर्ग़ीब फ़ी सुन-नल मदी-नति वस्सब्रि अलल अवानि, हदीस न० 475, (1374) 2/1001

'मैं अकवअ का बेटा हूं और आज का दिन दूध पीने वाले का दिन है। (यानी आज पता लग जाएगा कि किसने अपनी मां का दूध पिया है।')

सलमा बिन अकवअ कहते हैं कि ख़ुदा की क़सम! मैं उन्हें बराबर तीरों से छलनी करता रहा। जब कोई सवार मेरी ओर पलटकर आता तो मैं किसी पेड़ की ओट में बैठ जाता। फिर उसे तीर मारकर घायल कर देता, यहां तक कि जब ये लोग पहाड़ के तंग रास्ते में दाख़िल हुए तो मैं पहाड़ पर चढ़ गया और पत्थरों से उनकी ख़बर लेने लगा। इस तरह मैंने लगातार उनका पीछा किए रखा, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जितने भी ऊंट थे, मैंने उन सबको अपने पीछे कर लिया और उन लोगों ने मेरे लिए उन ऊंटों को आज़ाद छोड़ दिया, लेकिन मैंने फिर भी उनका पीछा करना जारी रखा और उन पर तीर बरसाता रहा, यहां तक कि बोझ कम करने के लिए उन्होंने भी तीस से ज़्यादा चादरें और तीस से ज़्यादा नेज़ें फेंक दिए। वे लोग जो कुछ भी फेंकते थे, मैं उस पर (निशान के तौर पर) थोड़े से पत्थर डाल देता था, ताकि अल्लाह के रसूल सल्ल० और उनके साथी पहचान लें (कि यह दुश्मन से छीना हुआ माल है)

इसके बाद वे लोग एक घाटी के तंग मोड़ पर बैठकर दोपहर का खाना खाने लगे। मैं भी एक चोटी पर जा बैठा। यह देखकर उनके चार आदमी पहाड़ पर चढ़कर मेरी ओर आए। (जब इतने क़रीब आ गए कि बात सुन सकें तो) मैंने कहा, तुम लोग मुझे पहचानते हो। मैं सलमा बिन अकवअ हूं। तुममें से जिस किसी को दौड़ाऊंगा, बे-धड़क पा लूंगा और जो कोई मुझे दौड़ाएगा, हरगिज़ न पा सकेगा।

मेरी यह बात सुनकर चारों वापस चले गए और मैं अपनी जगह जमा रहा, यहां तक कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० के सवारों को देखा कि पेड़ों के बीच से चले आ रहे हैं। सबसे आगे अख़रम थे, उनके पीछे अबू क़तादा और उनके पीछे मिक़्दाद बिन अस्वद। (मोर्चे पर पहुंचकर अब्दुर्रहमान और अख़रम में टक्कर हुई। हज़रत अख़रम ने अब्दुर्रहमान के घोड़े को घायल कर दिया, लेकिन अब्दुर्रहमान ने नेज़ा मारकर हज़रत अख़रम को क़त्ल कर दिया और उनके घोड़े पर जा पलटा, मगर इतने में हज़रत अबू क़तादा अब्दुर्रहमान के सर पर जा पहुंचे और उसे नेज़ा मारकर घायल कर दिया। बाक़ी हमलावर पीठ फेरकर भागे और हमने उन्हें खदेड़ना शुरू कर दिया।

मैं अपने पांवों पर उछलता हुआ दौड़ रहा था। सूरज डूबने से कुछ पहले उन लोगों ने अपना रुख़ एक घाटी की ओर मोड़ा, जिसमें ज़ीक़िरद नाम का एक चश्मा था। ये लोग प्यासे थे और वहां पानी पीना चाहते थे, लेकिन मैंने उन्हें

चश्मे से परे ही रखा और वे एक बूंद भी न चख सके।

अल्लाह के रसूल सल्ल० और शहसवार सहाबा रज़ि० दिन डूबने के बाद मेरे पास पहुंचे। मैंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! ये सब प्यासे थे। अगर आप मुझे सौ आदमी दे दें तो मैं ज़ीन सहित उनके तमाम घोड़े छीन लूं और उनकी गरदनें पकड़ कर ख़िदमत में हाज़िर कर दूं।

आपने फ़रमाया, अकवअ के बेटे ! तुम क़ाबू पा गए हो, तो अब ज़रा नर्मी बरतो।

फिर आपने फ़रमाया कि इस वक़्त बनू ग़तफ़ान में उनका सत्कार हो रहा है।

(इस ग़ज़वे पर) अल्लाह के रसूल सल्ल० ने समीक्षा करते हुए कहा, आज हमारे सबसे बेहतर शहसवार अबू क़तादा और सबसे बेहतर प्यादा सलमा हैं और आपने मुझे दो हिस्से दिए, एक प्यादा का हिस्सा और एक शहसवार का हिस्सा और मदीना वापस होते हुए मुझे (यह शरफ़ बख़्शा कि) अपनी अज़बा नामी ऊंटनी पर अपने पीछे सवार कर लिया।

इस ग़ज़वे के दौरान अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मदीने का प्रबन्ध हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम को सौंपा था और इस ग़ज़वे का झंडा हज़रत मिक़्दाद बिन अम्र रज़ि० को अता फ़रमाया था।[1]

---

1. पिछले स्रोत, जो आ चुके।

ग़ज़वा ख़ैबर और ग़ज़वा वादिल क़ुरा

मुहर्रम सन् 07 हि०

ख़ैबर, मदीना के उत्तर में एक सौ सत्तर किलोमीटर की दूरी पर एक बड़ा शहर था, यहां क़िले भी थे और खेतियां भी। अब यह एक बस्ती रह गई है। इसकी जलवायु कुछ अस्वास्थ्यकर है।

लड़ाई की वजह

जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हुदैबिया समझौते के नतीजे में अह्ज़ाब की लड़ाई के तीन बाज़ुओं में से सबसे मज़बूत बाज़ू (क़ुरैश) की ओर से पूरी तरह सन्तुष्ट और सुरक्षित हो गए, तो आपने चाहा कि बाक़ी दो बाज़ुओं—यहूदी और नज्द के क़बीलों—से भी हिसाब-किताब चुका लें, ताकि हर ओर से पूरी तरह अम्न और सलामती हासिल हो जाए और पूरे इलाक़े में सुकून का दौर दौरा हो और मुसलमान एक लगातार ख़ूनी संघर्ष से निजात पाकर अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने और उसकी दावत देने से फ़ारिग़ हो जाएं।

चूंकि ख़ैबर षड्यंत्रों का गढ़, फ़ौजी भड़काव का केन्द्र और लड़ाने-भिड़ाने और लड़ाई की आग लगाने की खान था, इसलिए सबसे पहले यही स्थान मुसलमानों की तवज्जोह का हक़दार था।

रहा यह सवाल कि ख़ैबर सच में ऐसा था या नहीं, तो इस सिलसिले में हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वे ख़ैबर वाले ही थे जो ख़ंदक़ की लड़ाई में मुश्रिकों के तमाम गिरोहों को मुसलमानों पर चढ़ा लाए थे। फिर यही थे जिन्होंने बनू क़ुरैज़ा को विद्रोह करने पर तैयार किया था, साथ ही यही थे जिन्होंने इस्लामी समाज के पांचवें कालम मुनाफ़िक़ों से और अह्ज़ाब की लड़ाई के तीसरे बाज़ू—बनू ग़त्फ़ान और बद्दुओं—से बराबर सम्पर्क बनाए रखा था और ख़ुद भी लड़ाई की तैयारियां कर रहे थे और अपनी इन कार्रवाइयों के ज़रिए मुसलमानों को आज़माइशों में डाल रखा था, यहां तक कि नबी सल्ल० को भी शहीद करने का प्रोग्राम बना लिया था और इन हालात से मजबूर होकर मुसलमानों को बार-बार फ़ौजी मुहिमें भेजनी पड़ी थीं, और इन चालों और षड्यंत्रों के कर्त्ता-धर्त्ता जैसे सलाम बिन अबिल हुक़ैक़ और असीर बिन ज़ारिम का सफ़ाया करना पड़ा था, लेकिन इन यहूदियों के ताल्लुक़ से मुसलमानों का दायित्व सच में इससे भी कहीं बड़ा था, अलबत्ता मुसलमानों ने इस दायित्व के निभाने में कुछ देर इसलिए

की थी कि अभी एक ताक़त—यानी क़ुरैश—जो इन यहूदियों से ज़्यादा बड़े ताक़तवर, योद्धा और सरकश थे, मुसलमानों के मुक़ाबले में थे, इसलिए मुसलमान उसे नज़रअंदाज़ करके यहूदियों का रुख़ नहीं कर सकते थे, लेकिन ज्यों ही क़ुरैश के साथ इस मोर्चाबन्दी का अन्त हुआ, इन अपराधी यहूदियों से निबटने के लिए फ़िज़ा साफ़ हो गई और उनके हिसाब का दिन क़रीब आ गया।

ख़ैबर को रवानगी

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हुदैबिया से वापस आकर ज़ुलहिज्जा का पूरा महीना और मुहर्रम के कुछ दिन मदीने में क़ियाम फ़रमाया। फिर मुहर्रम के बाक़ी दिनों में ख़ैबर के लिए रवाना हो गए।

टीकाकारों का कहना है कि ख़ैबर अल्लाह का वायदा था, जो उसने अपने इर्शाद के ज़रिए फ़रमाया था—

'अल्लाह ने तुमसे बहुत से माले ग़नीमत का वायदा किया है, जिसे तुम हासिल करोगे, तो उसको तुम्हारे लिए फ़ौरी तौर पर अता कर दिया।' (48, 20)

इससे तात्पर्य हुदैबिया समझौता है और बहुत से माले ग़नीमत से मुराद ख़ैबर है।

इस्लामी फ़ौज की तायदाद

चूंकि मुनाफ़िक़ और कमज़ोर ईमान के लोग हुदैबिया के सफ़र में अल्लाह के रसूल सल्ल० का साथ अपनाने के बजाए अपने घरों में बैठे रहे थे, इसलिए अल्लाह ने अपने नबी सल्ल० को इनके बारे में हुक्म देते हुए फ़रमाया—

'जब तुम ग़नीमत के माल हासिल करने के लिए जाने लगोगे, तो ये पीछे छोड़े गए लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो। ये चाहते हैं कि अल्लाह की बात बदल दें। इनसे कह देना कि तुम हरगिज़ हमारे साथ नहीं चल सकते। अल्लाह ने पहले ही से यह बात कह दी है, (इस पर) ये लोग कहेंगे कि (नहीं), बल्कि तुम लोग हमसे जलन करते हो। (हालांकि सच तो यह है) कि ये लोग कम ही समझते हैं।' (48-15)

चुनांचे जब अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ख़ैबर जाने का इरादा फ़रमाया, तो एलान फ़रमा दिया कि आपके साथ सिर्फ़ वही आदमी रवाना हो सकता है, जिसे अल्लाह की क़सम, जिहाद का चाव और ख़्वाहिश है। इस एलान के नतीजे में आपके साथ सिर्फ़ वही लोग जा सके, जिन्होंने हुदैबिया में पेड़ के नीचे बैअते रिज़्वान की थी और उनकी तायदाद सिर्फ़ चौदह सौ थी।

इस ग़ज़वे के दौरान मदीना का इन्तिज़ाम हज़रत सबाअ बिन अरफ़ता ग़िफ़ारी को और इब्ने इस्हाक़ के मुताबिक़ नुमैता बिन अब्दुल्लाह लैसी को सौंपा गया था। शोधकर्ताओं के नज़दीक पहली बात ज़्यादा सही है।[1]

इसी मौक़े पर हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० भी मुसलमान होकर मदीना तशरीफ़ लाए थे। उस वक़्त हज़रत सबाअ बिन अरफ़ता फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे। नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो हज़रत अबू हुरैरह उनकी ख़िदमत में पहुंचे। उन्होंने रास्ते का खाना दे दिया और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िरी के लिए ख़ैबर की ओर चल पड़े। जब नबी सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे (तो ख़ैबर जीता जा चुका था) अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुसलमानों से बातें करके हज़रत अबू हुरैरह और उनके साथियों को भी ग़नीमत के माल में शरीक कर लिया।

यहूदियों के लिए मुनाफ़िक़ों की सरगर्मियां

इस मौक़े पर यहूदियों की हिमायत में मुनाफ़िक़ों ने भी अच्छी-भली कोशिशें कीं, चुनांचे मुनाफ़िक़ों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई ने ख़ैबर के यहूदियों को यह पैग़ाम भेजा कि अब मुहम्मद ने तुम्हारा रुख़ किया है, इसलिए चौकन्ना हो जाओ, तैयारी कर लो और देखो, डरना नहीं, क्योंकि तुम्हारी तायदाद और तुम्हारा सामान ज़्यादा है और मुहम्मद के साथी बहुत थोड़े और बे-समान हैं और उनके पास हथियार भी बस थोड़े ही से हैं।

जब ख़ैबर वालों को इसका पता चला तो उन्होंने कनाना बिन अबी हुक़ैक़ और होज़ा बिन क़ैस को मदद हासिल करने के लिए बनू ग़तफ़ान के पास रवाना किया, क्योंकि वे ख़ैबर के यहूदियों के मित्र और मुसलमानों के ख़िलाफ़ उनके मददगार थे। यहूदियों ने इतना बढ़कर कहा कि अगर उन्हें मुसलमानों पर ग़लबा हासिल हो गया तो ख़ैबर की आधी पैदावार उन्हें दे दी जाएगी।

ख़ैबर का रास्ता

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ख़ैबर जाते हुए इस्र पहाड़ को पार किया। फिर सह्बा की घाटी से गुज़रे। इसके बाद एक और घाटी में पहुंचे, जिसका नाम रजीअ है (मगर वह यह रजीअ नहीं है, जहां अज़्ल व क़ारा की ग़द्दारी से बनू लह्यान के हाथों आठ सहाबा किराम की शहादत और हज़रत ज़ैद व ख़ुबैब रज़ि० की गिरफ़्तारी और फिर मक्का में शहादत की घटना घटी।)

रजीअ से बनू ग़तफ़ान की आबादी सिर्फ़ एक दिन और एक रात की दूरी पर

---

1. देखिए फ़त्हुल बारी 7/465, ज़ादुल मआद 2/133

स्थित थी और बनू ग़तफ़ान ने तैयार होकर यहूदियों की मदद के लिए ख़ैबर का रास्ता ले लिया था, लेकिन रास्ते ही में उन्हें अपने पीछे एक शोर-शराबा सुनाई दिया, तो उन्होंने समझा कि मुसलमानों ने उनके बाल-बच्चों और मवेशियों पर हमला कर दिया है, इसलिए वे वापस पलट गए और ख़ैबर को मुसलमानों के लिए आज़ाद छोड़ दिया।

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रास्ते के उन दोनों माहिरों को बुलाया जो फ़ौज को रास्ता बताने पर लगे थे, उनमें से एक का नाम हुसैल था। इन दोनों से आपने ऐसा उचित रास्ता मालूम करना चाहा जिसे अपना करके ख़ैबर में उत्तर की ओर से यानी मदीना के बजाए शाम की ओर से दाख़िल हो सकें, ताकि इस रणनीति के ज़रिए एक ओर तो यहूदियों को शाम भागने का रास्ता बन्द कर दें और दूसरी ओर बनू ग़तफ़ान और यहूदियों के बीच रोक बनकर उनकी ओर से किसी मदद के पहुंचने की संभावना ख़त्म कर दें।

एक रहनुमा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! मैं आपको ऐसे ही रास्ते ले चलूंगा। चुनांचे वह आगे-आगे चला। एक जगह पर पहुंचकर जहां कई रास्ते फूटते थे, अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल ! इन सब रास्तों से आप मंज़िल तक पहुंच सकते हैं।

आपने फ़रमाया कि वह हर एक का नाम बताए।

उसने बताया कि एक का नाम हज़न (सख़्त और ख़ुरदरा) है, आपने उस पर चलना मंज़ूर न किया।

उसने बताया, दूसरे का नाम शाश (बेचैनी वाला) है। आपने उसे भी मंज़ूर न किया।

उसने बताया, तीसरे का नाम हातिब (लकड़हारा) है। आपने उस पर भी चलने से इंकार कर दिया।

हुसैल ने कहा, अब एक ही रास्ता बाक़ी रह गया है।

हज़रत उमर ने फ़रमाया, उसका नाम क्या है ?

हुसैल ने कहा, मरहब ! नबी सल्ल० ने उसी पर चलना पसन्द फ़रमाया।

रास्ते की कुछ घटनाएं

1. हज़रत सलमा बिन अकवअ रज़ि० का बयान है कि हम लोग नबी सल्ल० के साथ ख़ैबर रवाना हुए। रात में सफ़र तै हो रहा था। एक आदमी ने आमिर से कहा था, ऐ आमिर ! क्यों न हमें अपनी अनोखी बातें सुनाओ।

आमिर कवि थे, सवारी से उतरे और क़ौम की ख़ूबियां गा-गाकर बयान

करने लगे। पद ये थे—

'ऐ अल्लाह ! अगर तू न होता, तो हम हिदायत न पाते, न सदक़ा करते, न नमाज़ पढ़ते, हम तुझ पर क़ुरबान ! तू हमें बख़्श दे, जब तक हम तक़्वा (ईशभय, संयम) अपनाएं। और अगर हम टकराएं तो हमारे क़दमों को जमाए रख और हम पर शान्ति उतार। जब हमें ललकारा जाता है, तो हम अकड़ जाते हैं और ललकार में हम पर लोगों ने भरोसा किया है।'

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, यह कौन गीतकार है ?

लोगों ने कहा, आमिर बिन अकवअ।

आपने फ़रमाया, अल्लाह उस पर दया करे।

क़ौम के एक आदमी ने कहा, अब तो (उनकी शहादत) वाजिब हो गई। आपने उनके वजूद का हमें पता क्यों न दिया ?[1]

सहाबा किराम को मालूम था कि (लड़ाई के मौक़े पर) अल्लाह के रसूल सल्ल० किसी इंसान के लिए ख़ास तौर से मग़फ़िरत की दुआ करें, तो वह शहीद हो जाता है।[2] और यही घटना ख़ैबर की लड़ाई में (हज़रत आमिर के साथ) घटी, इसीलिए उन्होंने अर्ज़ किया था कि क्यों न उनके लिए उम्र लम्बी होने की दुआ की गई उनके वजूद से हम कुछ और फ़ायदा उठाते।

2. ख़ैबर के बिल्कुल क़रीब सह्बा घाटी में आपने अस्त्र की नमाज़ पढ़ी, फिर रास्ते में खाने के सामान मंगवाए, तो सिर्फ़ सत्तू लाया गया और उसे आपके हुक्म से साना गया, फिर आपने खाया और सहाबा रज़ि० ने भी खाया। इसके बाद आप मग़रिब के लिए उठे, तो सिर्फ़ कुल्ली की। सहाबा ने भी कुल्ली की, फिर आपने नमाज़ पढ़ी और वुज़ू नहीं फ़रमाया।[3] (पिछले वुज़ू को ही काफ़ी समझा) फिर आपने इशा की नमाज़ अदा फ़रमाई।[4]

इस्लामी फ़ौज ख़ैबर के दामन में

मुसलमानों ने आख़िरी रात, जिसकी सुबह लड़ाई शुरू हुई, ख़ैबर के क़रीब गुज़ारी, लेकिन यहूदियों को कानों कान ख़बर न हुई।

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा ख़ैबर 2/603, सहीह मुस्लिम बाब ग़ज़वा ज़ीक़िरद वग़ैरह 2/115,
2. सहीह मुस्लिम 2/115
3. वही, सहीह बुख़ारी 2/603
4. मुग़ाज़िल वाक़दी (ग़ज़वा ख़ैबर, पृ० 112)

नबी सल्ल० का क़ायदा था कि जब रात के वक़्त किसी क़ौम के पास पहुंचते, तो सुबह हुए बग़ैर उनके क़रीब न जाते। चुनांचे उस रात जब सुबह हुई तो आपने अंधेरे में फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमाई। इसके बाद मुसलमान सवार होकर ख़ैबर की ओर बढ़े। उधर ख़ैबर वाले बेख़बरी में अपने फावड़े और खांची वग़ैरह लेकर अपनी खेती-बाड़ी के लिए निकले, तो अचानक फ़ौज देखकर चीख़ते हुए शहर की ओर भागे कि अल्लाह की क़सम! मुहम्मद फ़ौज समेत आ गए हैं। नबी सल्ल० ने (यह दृश्य देखकर) फ़रमाया, अल्लाहु अक्बर! ख़ैबर तबाह हुआ, अल्लाहु अक्बर, ख़ैबर तबाह हुआ। जब हम किसी क़ौम के मैदान में उतर पड़ते हैं, तो इन डराए हुए लोगों की सुबह बुरी हो जाती है।[1]

3. साथ ही जब आप ख़ैबर के इतने क़रीब पहुंच गए कि शहर दिखाई पड़ने लगा, तो आपने फ़रमाया, ठहर जाओ। फ़ौज ठहर गई और आपने यह दुआ फ़रमाई—

'ऐ अल्लाह! सातों आसमान और जिन पर वे साया डाले हुए हैं, उनके पालनहार! और सातों ज़मीन और जिनको वे उठाए हुए हैं, उनके पालनहार! और शैतानों और जिनको उन्होंने गुमराह किया, उनके पालनहार! हम तुझसे इस बस्ती की भलाई, इसके रहने वालों की भलाई और इसमें जो कुछ है, उसकी भलाई का सवाल करते हैं और इस बस्ती के शर से और इसके रहने वालों के शर से और इसमें जो कुछ है उसके शर से तेरी पनाह मांगते हैं।'

(इसके बाद फ़रमाया, चलो) अल्लाह के नाम से आगे बढ़ो।[2]

ख़ैबर के क़िले

ख़ैबर की आबादी दो मंडलों में बंटी हुई थी। एक मंडल में नीचे लिखे पांच क़िले थे—

1. हिस्ने नाइम, 2, हिस्न साब बिन मुआज़, 3. हिस्न क़िला ज़ुबैर, 4. हिस्न उबई, 5. हिस्ने नज़ार।

इनमें से पहले तीन क़िलों पर आधारित इलाक़ा नुज़रात कहलाता था और बाक़ी दो क़िलों पर आधारित इलाक़ा शक़ के नाम से मशहूर था।

ख़ैबर की आबादी का दूसरा मंडल कतीबा कहलाता था। इसमें सिर्फ़ तीन क़िले थे।

---

1. सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा ख़ैबर 2/603, 604
2. इब्ने हिशाम 2/329

1. हिस्न क़मूस, (यह क़बीला बनू नज़ीर के खानदान अबुल हुक़ैक़ का क़िला था, 2. हिस्ने वतीह, 3. हिस्ने सलालिम।

इन आठ क़िलों के अलावा ख़ैबर में कुछ और क़िले और गढ़ियां भी थीं, पर वे छोटी थीं, और ताक़त और हिफ़ाज़त में इन क़िलों जैसी न थीं।

जहां तक लड़ाई का ताल्लुक़ है, तो वह सिर्फ़ पहले मंडल में हुई। दूसरे मंडल के तीनों क़िले लड़ने वालों के ज़्यादा होने के बावजूद लड़ाई के बिना ही मुसलमानों के हवाले कर दिए गए।

नबी सल्ल० ने फ़ौज के पड़ाव के लिए एक जगह चुनी। इस पर हुबाब बिन मुंज़िर रज़ि० ने आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह बताइए कि इस जगह अल्लाह ने आपको पड़ाव डालने का हुक्म दिया है या यह सिर्फ़ आपकी लड़ाई की कोई तदबीर और राय है ?

आपने फ़रमाया, नहीं, यह सिर्फ़ एक राय और तदबीर है।

उन्होंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! यह जगह क़िला नज़ात से बहुत ही क़रीब है और ख़ैबर के सारे योद्धा इसी क़िले में हैं। उन्हें हमारे हालात का पूरा-पूरा पता रहेगा और हमें उनके हालात की ख़बर न होगी। उनके तीर हम तक पहुंच जाएंगे और हमारे तीर उन तक न पहुंच सकेंगे। हम उनकी छापमारी से भी न बचे रहेंगे, फिर यह जगह खजूरों के बीच में है, नीचे के हिस्से में है और यहां की धरती भी महामारी वाली है, इसलिए मुनासिब होगा कि आप किसी ऐसी जगह पड़ाव डालने का हुक्म फ़रमाएं, जो इन ख़तरों से ख़ाली हों और हम उस जगह जाकर पड़ाव डालें।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुमने जो राय दी, बिल्कुल दुरुस्त है। इसके बाद दूसरी जगह चले गए।

लड़ाई की तैयारी और विजय की शुभ-सूचना

जिस रात ख़ैबर की सीमाओं में अल्लाह के रसूल सल्ल० दाख़िल हुए, फ़रमाया, मैं कल एक ऐसे आदमी को भेज दूंगा जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है और जिससे अल्लाह और उसके रसूल मुहब्बत करते हैं। सुबह हुई तो सहाबा किराम नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हर एक यही आरज़ू बांधे और आस लगाए खड़ा था कि झंडा उसे मिल जाएगा। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, अली बिन अबी तालिब कहां है ?

सहाबा ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! उनकी तो आंख आई हुई है।[1]

---

1. इसी बीमारी की वजह से पहले पहल आप पीछे रह गए थे, फिर फ़ौज से जा मिले।

फ़रमाया, उन्हें बुला लाओ। वह लाए गए। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनकी आंखों में होंठों का राल लगा दिया और दुआ फ़रमाई। वह स्वस्थ हो गये, मानो उन्हें तक्लीफ़ थी ही नहीं। फिर उन्हें झंडा अता फ़रमाया।

उन्होंने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! मैं उनसे उस वक़्त तक लड़ूं कि वे हमारे जैसे हो जाएं।

आपने फ़रमाया, इत्मीनान से जाओ, यहां तक कि उनके मैदान में उतरो, फिर उन्हें सलाम की दावत दो और इस्लाम में अल्लाह के जो हक़ उन पर वाजिब होते हैं, उनसे सचेत करो। ख़ुदा की क़सम! तुम्हारे ज़रिए अल्लाह एक आदमी को भी हिदायत दे दे, तो यह तुम्हारे लिए लाल ऊंटों से बेहतर है।[1]

लड़ाई की शुरूआत और क़िला नाइम की जीत

बहरहाल यहूदियों ने जब फ़ौज़ देखी तो सीधे शहर में भागे और अपने क़िलों में क़िलाबन्द हो गए और यह बिल्कुल स्वाभाविक था कि लड़ाई के लिए तैयार हो जाएं। मुसलमानों ने सबसे पहले नाइम क़िले पर हमला किया, क्योंकि यह क़िला अपनी स्थिति की नज़ाकत और रणनीति की दृष्टि से यहूदियों की पहली रक्षा-पंक्ति की हैसियत रखता था और यही क़िला मरहब नामी शहज़ोर और जांबाज़ यहूदी का क़िला था, जिसे एक हज़ार मर्दों के बराबर जाना जाता था।

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु मुसलमानों की फ़ौज लेकर उस क़िले के सामने पहुंचे और यहूदियों को इस्लाम की दावत दी, तो उन्होंने यह दावत ठुकरा दी और अपने बादशाह मरहब की कमान में मुसलमानों के मुक़ाबले में आ खड़े हुए।

लड़ाई के मैदान में उतरकर पहले मरहब ने लड़ने की दावत दी, जिसकी दशा सलमा बिन अकवअ ने यों बयान की है कि जब हम लोग ख़ैबर पहुंचे तो उनका बादशाह मरहब अपनी तलवार लेकर घमंड में चूर इठलाता और यह कहता हुआ सामने आया—

ख़ैबर को मालूम है, मैं मरहब हूं, हथियारबन्द, बहादुर और तजुर्बेकार, जब

---

1. सहीह बुख़ारी बाब ग़ज़वा ख़ैबर 2/605, 606। कुछ रिवायतों से मालूम होता है कि ख़ैबर के एक क़िले की जीत में कई कोशिशों की नाकामी के बाद हज़रत अली को झंडा दिया गया था, लेकिन शोधकों के नज़दीक तर्जीह के क़ाबिल वही है जिसका ऊपर ज़िक्र किया गया।

लड़ाई की आग भड़क उठे।

इसके मुक़ाबले में मेरे चचा आमिर सामने आए और फ़रमाया—

'ख़ैबर जानता है मैं आमिर हूं, हथियारबन्द, वीर और योद्धा।'

फिर दोनों ने एक दूसरे पर वार किया। मरहब की तलवार मेरे चचा आमिर की ढाल में जा छिपी और आमिर ने उसे नीचे से मारना चाहा, लेकिन उसकी तलवार छोटी थी। उन्होंने यहूदी की पिंडली पर हमला किया तो तलवार का सिर पलटकर उनके घुटने पर आ लगा और आख़िरकार उसी घाव से उनकी मौत हो गई। नबी सल्ल० ने अपनी दो उंगलियां इकट्ठा करके उनके बारे में फ़रमाया कि उनके लिए दोहरा बदला है। वह बड़े जांबाज़ मुजाहिद थे, कम ही उन जैसा कोई अरब भू-भाग पर चला होगा।[1]

बहरहाल हज़रत आमिर के घायल होने के बाद मरहब के मुक़ाबले के लिए हज़रत अली तशरीफ़ ले गए। हज़रत सलमा बिन अकवअ का बयान है कि उस वक़्त हज़रत अली ने ये पद कहे—

'मैं वह व्यक्ति हूं कि मेरी मां ने मेरा नाम हैदर (शेर) रखा है, जंगल के शेर की तरह भयावह। मैं उन्हें साअ के बदले नेज़े की नाप पूरी करूंगा।' इसके बाद मरहब के सर पर ऐसी तलवार मारी कि वहीं ढेर हो गया। फिर हज़रत अली ही के हाथों जीत मिली।[2]

लड़ाई के दौरान हज़रत अली रज़ि० यहूदियों के क़रीब पहुंचे, तो एक यहूदी ने क़िले की चोटी से झांककर कहा, तुम कौन हो?

हज़रत अली ने कहा, मैं अली बिन अबू तालिब हूं।

यहूदियों ने कहा, उस किताब की क़सम जो मूसा पर उतारी गई, तुम लोग बुलंद हुए।

इसके बाद मरहब का भाई यासिर यह कहते हुए निकला कि कौन है जो मेरा मुक़ाबला करेगा। उसकी इस चुनौती पर हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु मैदान में उतरे। इस पर उनकी मां हज़रत सफ़िया रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल

---

1. सहीह मुस्लिम, बाब ग़ज़वा ख़ैबर 2/142, बाब ग़ज़वा ज़ीक़िरद वग़ैरह 2/115, सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़वा ख़ैबर 2/602
2. मरहब के क़ातिल के बारे में स्रोतों में बड़ा मतभेद है और इसमें भी बड़ा मतभेद है कि वह किस दिन मारा गया और किस दिन यह क़िला जीता गया। बुख़ारी व मुस्लिम की रिवायतों में किसी हद तक मतभेद पाया जाता है। हमने ऊपर जो कुछ बताया है, वह सहीह बुख़ारी की रिवायत को तर्जीह देने की वजह से है।

सल्ल० ! क्या मेरा बेटा क़त्ल किया जाएगा?

आपने फ़रमाया, बल्कि, तुम्हारा बेटा उसे क़त्ल करेगा। चुनांचे हज़रत ज़ुबैर ने यासिर को क़त्ल कर दिया।

इसके बाद हिस्ने नाइम के पास ज़ोरदार लड़ाई हुई, जिसमें कई बड़े यहूदी सरदार मारे गए और बाक़ी यहूदियों में मुक़ाबले की ताक़त न रही, चुनांचे वे मुसलमानों का हमला न रोक सके। कुछ सूत्रों से मालूम होता है कि यह लड़ाई कई दिन जारी रही और इसमें ज़बरदस्त मुक़ाबला करना पड़ा, फिर भी यहूदी मुसलमानों को हराने से निराश हो चुके थे, इसलिए चुपके-चुपके इस क़िले से निकलकर क़िला साब में चले गए और मुसलमानों ने क़िला नाइम पर क़ब्ज़ा कर लिया।

क़िला साब बिन मुआज़ की जीत

क़िला नाइम के बाद क़िला साब ताक़त और हिफ़ाज़त के लिहाज़ से दूसरा सबसे बड़ा मज़बूत क़िला था। मुसलमानों ने हज़रत हुबाब बिन मुंज़िर अंसारी रज़ि० की कमान में उस क़िले पर हमला किया और तीन दिन तक उसे घेरे में लिए रखा। तीसरे दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस क़िले की जीत के लिए ख़ास तौर से दुआ फ़रमाई।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि क़बीला अस्लम की शाखा बनू सह्म के लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, हम लोग चूर हो गए हैं और हमारे पास कुछ नहीं है।

आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! तुझे इनका हाल मालूम है। तू जानता है कि इनके अन्दर ताक़त नहीं और मेरे पास भी कुछ नहीं कि मैं इन्हें दूं। इसलिए यहूदियों के ऐसे क़िले को जिता जो सबसे ज़्यादा काम का हो और जहां सब्से ज़्यादा ख़ुराक और चर्बी मिले। इसके बाद लोगों ने हमला किया और अल्लाह ने साब बिन मुआज़ पर जीत दिला दी। ख़ैबर में कोई ऐसा क़िला न था, जहां इस क़िले से ज़्यादा ख़ुराक और चर्बी रही हो।[1]

और जब दुआ फ़रमाने के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों से इस क़िले पर हमले की दावत दी, तो हमला करने में बनू अस्लम ही पेश-पेश थे। यहां भी क़िले के सामने लड़ाई और मार-पीट हुई। फिर उसी दिन सूरज डूबने से पहले-पहले क़िला जीत लिया गया और मुसलमानों ने उसमें

1. इब्ने हिशाम 2/332

कुछ मनजनीक़ और दबाबे[1] भी पाए।

इब्ने इस्हाक़ की इस रिवायत में जिसमें तेज़ भुखमरी का उल्लेख हुआ है, कहा गया है कि उसी का यह नतीजा था कि लोगों ने (जीत मिलते ही) गधे ज़िब्ह कर दिए और चूल्हों पर हंडिया चढ़ा दी, लेकिन जब अल्लाह के रसूल सल्ल० को इसका इल्म हुआ तो आपने घरेलू गधे के गोश्त से मना फ़रमा दिया।

क़िला ज़ुबैर की जीत

क़िला नाइम और क़िला मुसअब की जीत के बाद यहूदी नतात के सारे क़िलों से निकलकर क़िला ज़ुबैर में जमा हो गए। यह एक सुरक्षित क़िला था और पहाड़ की चोटी पर स्थित था। रास्ता इतना पेचदार और मुश्किल था कि यहां न सवारों की पहुंच हो सकती थी, न प्यादों की, इसलिए अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उसके चारों ओर घेरा डाल दिया और तीन दिन तक घेराव किए पड़े रहे। इसके बाद एक यहूदी ने आकर कहा, ऐ अबुल क़ासिम ! अगर आप एक महीने तक घेराव किए रहे हों, तो भी इन्हें कोई परवाह न होगी, अलबत्ता इनके पीने के पानी और चश्मे ज़मीन के नीचे हैं। ये रात में निकलते हैं, पानी पी लेते और ले लेते हैं, फिर क़िले में वापस चले जाते हैं और आपसे बचे रहते हैं। अगर आप इनका पानी बन्द कर दें, तो ये घुटने टेक देंगे।

इस सूचना पर आपने इनका पानी बन्द कर दिया। इसके बाद यहूदियों ने बाहर आकर ज़बरदस्त लड़ाई लड़ी, जिसमें कई मुसलमान मारे गए और लगभग दस यहूदी भी काम आए, लेकिन क़िला जीत लिया गया।

क़िला उबई की जीत

क़िला ज़ुबैर से हारने के बाद यहूदी किला उबई में क़िला बन्द हो गए। मुसलमानों ने उसका भी घेराव कर लिया। अब की बार दो वीर यहूदी एक के बाद एक लड़ाई की दावत देते हुए मैदान में उतरे और दोनों ही मुसलमान योद्धाओं के हाथों मारे गए। दूसरे यहूदी के क़ातिल लाल पट्टी वाले मशहूर योद्धा हज़रत अबू दुजाना समाक बिन ख़रशा अंसारी रज़ि० थे। वह दूसरे यहूदी को क़त्ल करके बहुत तेज़ी से क़िले में जा घुसे और उनके साथ ही इस्लामी

---

1. लकड़ी का एक सुरक्षित और बन्द गाड़ीनुमा डिब्बा बनाया जाता था, जिसमें नीचे से कई आदमी घुसकर क़िले की फ़सील को जा पहुंचते थे और दुश्मन की पहुंच से बचे रहते हुए फ़सील में शगाफ (छेद) करते थे, यही दबाबा कहलाता था। अब टैंक को दबाबा कहा जाता है।

फ़ौज भी क़िले में जा घुसी। क़िले के अन्दर कुछ देर तक तो ज़ोरदार लड़ाई हुई, लेकिन इसके बाद यहूदियों ने क़िले से खिसकना शुरू किया और आख़िर में सबके सब क़िला नज़ार में पहुंच गए जो ख़ैबर के पहले आधे (यानी पहले मंडल) का आख़िरी क़िला था।

क़िला नज़ार की जीत

यह क़िला इलाक़े का सबसे मज़बूत क़िला था और यहूदियों को लगभग यक़ीन था कि मुसलमान अपनी इंतिहाई कोशिशें लगा देने के बावजूद इस क़िले में दाख़िल नहीं हो सकते, इसलिए इस क़िले में वे सब औरतों और बच्चों समेत ठहरे, जबकि पिछले चार क़िलो में औरतों और बच्चों को नहीं रखा गया था।

मुसलमानों ने इस क़िले का सख़्ती से घेराव किया और यहूदियों पर कड़ा दबाव डाला, लेकिन क़िला चूंकि एक ऊंची और सुरक्षित पहाड़ी पर स्थित था, इसलिए इसमें दाख़िल होने की कोई शक्ल बन नहीं पड़ रही थी।

इधर यहूदी क़िले से बाहर निकलकर मुसलमानों से टकराने की जुर्रत नहीं कर रहे थे, अलबत्ता तीर बरसा-बरसाकर और पत्थर फेंक-फेंककर कड़ा मुकाबला कर रहे थे।

जब इस क़िले (नज़ार) की जीत मुसलमानों के लिए ज़्यादा कठिन महसूस होने लगी तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मिनजनीक़ के हथियारों को लगाने का हुक्म फ़रमाया और मालूम होता है कि मुसलमानों ने कुछ गोले फेंके भी, जिससे क़िले की दीवारों में सूराख़ हो गए और मुसलमान अन्दर घुस गए।

इसके बाद क़िले के भीतर ज़ोरदार लड़ाई हुई और यहूदियों को ज़बरदस्त हार का मुंह देखना पड़ा। वे बाक़ी क़िलों की तरह इस क़िले से चुपके-चुपके खिसककर न निकल सके, बल्कि इस तरह बकटुट भागे कि अपनी औरतों और बच्चों को भी साथ न ले जा सके और उन्हें मुसलमानों की रहम व करम पर छोड़ दिया।

इस मज़बूत क़िले की जीत के बाद ख़ैबर का पहला आधा यानी नतात और शक़ का इलाक़ा जीत लिया गया। इस इलाक़े में छोटे-छोटे कुछ और क़िले भी थे, लेकिन इस क़िले के जीतते ही यहूदियों ने इन बाक़ी क़िलों को भी ख़ाली कर दिया और शहर ख़ैबर के दूसरे मंडल यानी कुतैबा की ओर भाग गए।

ख़ैबर के दूसरे आधे की जीत

नतात और शक़ का इलाक़ा जीता जा चुका तो अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कुतैबा व तीह और सलालिम के इलाक़े का रुख़ किया। सलामिम बनू नज़ीर के

एक मशहूर यहूदी अबुल हुक़ैक़ का क़िला था। इधर नतात और शक़ के इलाक़े से हार कर भागने वाले सारे यहूदी भी यहीं पहुंचे हुए थे और बड़ी ठोस क़िलाबंदी कर ली थी।

युद्ध विद्या के विशेषज्ञों में मतभेद है कि यहां के तीनों क़िलों में से किसी क़िले पर लड़ाई हुई या नहीं? इब्ने इस्हाक़ के बयान से यह स्पष्ट है कि क़िला क़मूस को जीतने के लिए लड़ाई लड़ी गई, बल्कि उसे देखने से यह भी मालूम होता है कि यह क़िला सिर्फ़ लड़ाई लड़कर जीता गया था और यहूदियों की ओर से आत्म समर्पण के लिए यहां कोई बातचीत नहीं हुई थी।[1]

लेकिन वाक़दी ने दो टोक शब्दों में स्पष्ट किया है कि इस इलाक़े के तीनों क़िले बातचीत के ज़रिए मुसलमानों के हवाले किए गए। मुम्किन है कि क़िला क़मूस के समर्पण के लिए कुछ लड़ाई के बाद बातचीत हुई हो, अलबत्ता बाक़ी दोनों क़िले किसी लड़ाई के बग़ैर मुसलमानों के हवाले कर दिए गए।

जब अल्लाह के रसूल सल्ल० इस इलाक़े कुतैबा में तशरीफ़ लाए तो वहां के निवासियों का कड़ाई से घेराव किया। यह घेराव चौदह दिन जारी रहा। यहूदी अपने क़िलों से निकल ही नहीं रहे थे, यहां तक कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने इरादा किया कि मनजनीक़ लगा लें। जब यहूदियों को तबाही का यक़ीन हो गया तो उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल० से समझौते की बात शुरू की।

समझौते की बातचीत

पहले इब्ने अबिल हुक़ैक़ ने अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास पैग़ाम भेजा कि क्या मैं आपके पास आकर बातचीत कर सकता हूं?

आपने फ़रमाया, हां।

और जब यह जवाब मिला तो आपके पास हाज़िर होकर इस शर्त पर समझौता कर लिया कि क़िले में जो फ़ौज है उसकी जान बख़्शी कर दी जाएगी और उनके बाल-बच्चे उन्हीं के पास रहेंगे। (यानी उन्हें लौंडी और ग़ुलाम नहीं बनाया जाएगा।) बल्कि वे अपने बाल-बच्चों को लेकर ख़ैबर के भू-भाग से निकल जाएंगे और अपने माल, बाग़, ज़मीन, सोने, चांदी, घोड़े, ज़िरहें, अल्लाह के रसूल सल्ल० के हवाले कर देंगे। सिर्फ़ वह कपड़ा ले जाएंगे जो इंसान की पीठ पर होगा।[2]

---

1. देखिए, इब्ने हिशाम 2/331, 336, 337
2. लेकिन सुनने अबू दाऊद में यह खुलकर लिखा हुआ है कि आपने इस शर्त पर समझौता किया था कि मुसलमानों की ओर से यहूदियों को इजाज़त होगी कि ख़ैबर से

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, और अगर तुम लोगों ने मुझसे कुछ छिपाया, तो फिर अल्लाह और उसके रसूल की ज़िम्मेदारी न होगी।

यहूदियों ने यह शर्त मंज़ूर कर ली और समझौता हो गया।[1] इस समझौते के बाद तीनों क़िले मुसलमानों के हवाले कर दिए गए और इस तरह ख़ैबर की जीत पूरी हो गई।

अबुल हुक़ैक़ के दोनों बेटों की बद-अहदी और उनका क़त्ल

इस समझौते के बावजूद अबुल हुक़ैक़ के दोनों बेटों ने बहुत-सा माल ग़ायब कर दिया। एक खाल ग़ायब कर दी जिसमें माल और हुइ बिन अख़तब के गहने थे। उसे हुइ बिन अख़तब मदीने से निकाले जाने के वक़्त अपने साथ लाया था।

इब्ने इस्हाक़ का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कनाना बिन अबिल हुक़ैक़ लाया गया। उसके पास बनू नज़ीर का ख़ज़ाना था, लेकिन आपने मालूम किया तो उसने यह मानने से इंकार कर दिया कि इस ख़ज़ाने की जगह के बारे में कोई ज्ञान है। इसके बाद एक यहूदी ने आकर बताया कि मैं कनाना को हर दिन इस वीराने का चक्कर लगाते हुए देखता था, इस पर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कनाना से फ़रमाया, यह बताओ कि अगर यह ख़ज़ाना हमने तुम्हारे पास से बरामद कर लिया तो हम तुम्हें क़त्ल कर देंगे ना।

उसने कहा, जी हां।

आपने वीराना खोदने का हुक्म दिया और उससे कुछ ख़ज़ाना बरामद हुआ। फिर बाक़ी ख़ज़ाने के बारे में आपने मालूम किया, तो फिर उसने अदा करने से इंकार कर दिया। इस पर आपने उसे हज़रत ज़ुबैर के हवाले कर दिया और फ़रमाया, इसे सज़ा दो, यहां तक कि इसके पास जो कुछ है, वह सबका सब हमें हासिल हो जाए।

हज़रत ज़ुबैर ने उसके सीने पर चक़माक़ की ठोकरें मारीं, यहां तक कि उसकी जान पर बन आई, फिर अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मुहम्मद बिन मस्लमा के हवाले कर दिया और उन्होंने महमूद बिन मस्लमा के बदले उसकी गरदन मार

निकलते हुए अपनी सवारियों पर जितना माल लाद सकें, ले जाएं। (देखिए अबू दाऊद, बाब मा जा-अ फ़ी हुक्मि अरज़ि ख़ैबर 2/76)

1. ज़ादुल मआद 2/136

दी। (महमूद साया हासिल करने के लिए क़िला नाइम की दीवार के नीचे बैठे थे कि उस आदमी ने उन पर चक्की का पाट गिराकर उन्हें क़त्ल कर दिया था।)

इब्ने क़य्यिम का बयान है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबुल हुक़ैक़ के दोनों बेटों को क़त्ल करा दिया था और उन दोनों के ख़िलाफ़ माल छिपाने की गवाही कनाना के चचेरे भाई ने दी थी।

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हुइ बिन अख़तब की बेटी हज़रत सफ़िया को क़ैदी बना लिया। वह कनाना बिन अबिल हुक़ैक़ के तहत थीं और अभी दुल्हन थीं। उन्हें हाल में ही विदा किया गया था।

ग़नीमत के माल का बंटवारा

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने यहूदियों को ख़ैबर से देश निकाला देने का इरादा फ़रमाया था और समझौता में यही तै भी हुआ था, मगर यहूदियों ने कहा, ऐ मुहम्मद ! हमें इसी धरती पर रहने दीजिए, हम इसकी देख-रेख करेंगे, क्योंकि हमें आप लोगों से ज़्यादा इसकी जानकारी है। इधर अल्लाह के रसूल सल्ल० और सहाबा किराम के पास इतने ग़ुलाम न थे जो इस धरती की देख-रेख करते और जोतने-बोने का काम कर सकते और न ख़ुद सहाबा किराम को इतनी फ़ुर्सत थी कि यह काम पूरा कर सकते। इसलिए आपने ख़ैबर की ज़मीन इस शर्त पर यहूदियों के हवाले कर दी कि सारी खेती और तमाम फलों की पैदावार का आधा यहूदियों को दिया जाएगा। और जब तक अल्लाह के रसूल सल्ल० की मर्ज़ी होगी, उस पर बरक़रार रखेंगे (और जब चाहेंगे देश-निकाला दे देंगे) इसके बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन रुवाहा रज़ि० ख़ैबर की पैदावार का अन्दाज़ा लगाया करते थे।

ख़ैबर का बंटवारा इस तरह किया गया कि उसे 36 हिस्सों में बांट दिया गया। हर हिस्सा एक सौ हिस्सों का योग था। इस तरह कुल तीन हज़ार छः सौ हिस्से हुए। इसमें से आधा यानी अठारह सौ हिस्से अल्लाह के रसूल सल्ल० और मुसलमानों के थे। आम मुसलमानों की तरह अल्लाह के रसूल सल्ल० का भी सिर्फ़ एक हिस्सा था, बाक़ी यानी अठारह सौ हिस्सों पर आधारित दूसरा आधा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों की सामूहिक ज़रूरतों के लिए अलग कर लिया था।

अठारह सौ हिस्सों पर ख़ैबर का बंटवारा इसलिए किया गया कि यह अल्लाह की ओर से हुदैबिया वालों के लिए एक उपहार था, जो मौजूद थे, उनके लिए भी और जो मौजूद नहीं थे, उनके लिए भी और हुदैबिया वालों की तायदाद

चौदह सौ थी। जो ख़ैबर आते हुए अपने साथ दो सौ घोड़े लाए थे, चूंकि सवार के अलावा खुद घोड़े को भी हिस्सा मिलता है और घोड़े का हिस्सा डबल यानी दो फ़ौजियों के बराबर होता है, इसलिए ख़ैबर को अठारह सौ हिस्सों पर बांटा गया तो दो सौ घुड़सवारों को तीन-तीन हिस्से के हिसाब से छः सौ मिले, और बारह सौ पैदल फ़ौज को एक-एक हिस्से के हिसाब से बारह सौ हिस्से मिले।[1]

ख़ैबर की ग़नीमत के माल के ज़्यादा होने का अन्दाज़ा सहीह बुख़ारी में लिखी हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की उस रिवायत से होता है कि उन्होंने फ़रमाया, 'हम लोग आसूदा न हुए, यहां तक कि हमने ख़ैबर जीत लिया।'

इसी तरह हज़रत आइशा रज़ि० की उस रिवायत से मालूम होता है कि उन्होंने फ़रमाया, जब ख़ैबर जीता गया, तो हमने कहा, 'अब हमें पेट भरकर खजूर मिलेगी।'[2]

साथ ही जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना वापस तशरीफ़ लाए तो मुहाजिरों ने अंसार को खजूरों के वे पेड़ वापस कर दिए, जो अंसार ने इमदाद के तौर पर उन्हें दे रखे थे, क्योंकि उनके लिए ख़ैबर में माल और खजूर के पेड़ हो चुके थे।[3]

हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब और अशअरी सहाबा का आना

इसी लड़ाई में हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब नबी सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उनके साथ अशअरी मुसलमान यानी हज़रत अबू मूसा और उनके साथी भी थे।

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० का बयान है कि यमन में हमें अल्लाह के रसूल सल्ल० के ज़ाहिर होने का पता चला, तो हम लोग यानी मैं और मेरे दो भाई अपनी क़ौम के पचास आदमियों समेत अपने वतन से हिजरत करके एक नाव में सवार होकर आपकी सेवा में पहुंचने के लिए चले, लेकिन हमारी नाव ने हमें नजाशी के देश हब्शा में फेंक दिया। वहां हज़रत जाफ़र और उनके साथियों से मुलाक़ात हुई। उन्होंने बताया कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हमें भेजा है और यहीं ठहरे रहने का हुक्म दिया है। आप लोग भी हमारे साथ ठहर जाइए।

चुनांचे हम लोग भी उनके साथ ठहर गए और नबी सल्ल० की ख़िदमत में

---

1. ज़ादुल मआद 2/137, 138, मय वज़ाहत
2. सहीह बुख़ारी 3/609
3. ज़ादुल मआद 2/148, सहीह मुस्लिम 2/96

उस वक़्त पहुंच सके जब आप ख़ैबर जीत चुके थे। आपने हमारा भी हिस्सा लगाया, लेकिन हमारे अलावा किसी भी आदमी का, जो ख़ैबर की जीत में मौजूद न था, कोई हिस्सा नहीं लगाया, सिर्फ़ लड़ाई में शरीक लोगों का ही हिस्सा लगाया। अलबत्ता हज़रत जाफ़र और उनके साथियों के साथ हमारी नाव वालों का भी हिस्सा लगाया और उनको भी ग़नीमत के माल का हिस्सा बांट कर दिया।[1]

और जब हज़रत जाफ़र नबी सल्ल० की ख़िदमत में पहुंचे तो आपने उनका स्वागत किया और उन्हें चूमकर फ़रमाया, अल्लाह की क़सम! मैं नहीं जानता कि मुझे किस बात की ख़ुशी ज़्यादा है, ख़ैबर के जीतने की या जाफ़र के आने की।[2]

याद रहे कि इन लोगों को बुलाने के लिए अल्लाह के रसूल सल्ल० ने हज़रत अम्र बिन उमैया ज़ुमरी को नजाशी के पास भेजा था और उससे कहलवाया था कि वह उन लोगों को आपके पास रवाना कर दे। चुनांचे नजाशी ने दो नावों पर सवार करके उन्हें रवाना कर दिया। ये कुल सोलह आदमी थे और उनके साथ उनके बाक़ी बच्चे और औरतें भी थीं। बाक़ी लोग इससे पहले मदीना आ चुके थे।[3]

हज़रत सफ़िया से शादी

हम बता चुके हैं कि जब हज़रत सफ़िया का शौहर कनाना बिन अबू हुक़ैक़ अपनी बद-अह्दी की वजह से क़त्ल कर दिया गया तो हज़रत सफ़िया क़ैदी औरतों में शामिल कर ली गईं। इसके बाद जब ये क़ैदी औरतें जमा की गईं तो हज़रत दिह्या बिन ख़लीफ़ा कलबी रज़ि० ने नबी की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मुझे क़ैदी औरतों में से एक लौंडी दे दीजिए।

आपने फ़रमाया, जाओ और एक लौंडी ले लो।

उन्होंने जाकर हज़रत सफ़िया बिन्त हुइ को चुन लिया। इस पर एक आदमी ने आपके पास आकर अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के नबी! आपने बनी क़ुरैज़ा और बनी नज़ीर की सैयिदा (सरदारनी) सफ़िया को दिह्या के हवाले कर दिया, हालांकि वह सिर्फ़ आपकी शान के मुताबिक़ है।

आपने फ़रमाया, दिह्या को सफ़िया समेत बुलाओ।

---

1. सहीह बुख़ारी 1/443, साथ ही देखिए फ़त्हुल बारी 7/484-487
2. ज़ादुल मआद 2/139, अल-मोजम अस-सग़ीर अत-तबरानी 1/19
3. तारीख़ ख़ज़री 1/128

हज़रत दिह्या उनको साथ लिए हाज़िर हुए। आपने उन्हें देखकर हज़रत दिह्या से फ़रमाया कि क़ैदियों में से कोई दूसरी लौंडी ले लो। फिर आपने हज़रत सफ़िया पर इस्लाम पेश किया। उन्होंने इस्लाम क़ुबूल कर लिया। इसके बाद आपने उन्हें आज़ाद करके उनसे शादी कर ली और उनकी आज़ादी ही को उनका मह्र क़रार दिया। मदीना वापसी में सद्दे सहबा पहुंचकर वह हलाल हो गईं। इसके बाद उम्मे सुलैम रज़ि० ने उन्हें आपके लिए सजाया-संवारा और रात में आपके पास रुख़्सत कर दिया। आपने दूल्हे की हैसियत से उनके साथ सुबह की और खजूर, घी, और सत्तू सान कर वलीमा खिलाया और रास्ते में तीन रात उनके पास क़ियाम फ़रमाया।[1]

इस मौक़े पर आपने उनके चेहरों पर हरा निशान देखा, पूछा, यह क्या है?

कहने लगीं, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपके ख़ैबर आने से पहले मैंने सपना देखा कि चांद अपनी जगह से टूटकर मेरी गोद में आ गिरा है। ख़ुदा की क़सम ! मुझे आपके बारे में कोई ख़्याल भी न था, लेकिन मैंने यह सपना अपने पति से बयान किया, तो उसने मेरे चेहरे पर थप्पड़ रसीद करते हुए कहा, यह बादशाह जो मदीना में है, तुम उसकी आरज़ू कर रही हो।[2]

विष में बुझी बकरी की घटना

ख़ैबर की जीत के बाद जब अल्लाह के रसूल सल्ल० सन्तुष्ट और एकाग्र हो चुके, तो सलाम बिन मश्कम की बीवी जैनब बिन्त हारिस ने आपके पास भुनी हुई बकरी भेंट की। उसने कुछ पूछ रखा था कि अल्लाह के रसूल सल्ल० कौन-सा अंग पसन्द करते हैं और उसे बताया गया था कि दस्ता। इसलिए उसने दस्ते में ख़ूब विष मिला दिया था, और उसके बाद बाक़ी हिस्सा भी विष में भर दिया था। फिर उसे लेकर वह अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास आई और आपके सामने रखा, तो आपने दस्ता उठाकर उसका एक टुकड़ा चबाया, लेकिन निगलने के बजाए थूक दिया, फिर फ़रमाया, यह हड्डी मुझे बता रही है कि इसमें विष घोला गया है।

इसके बाद आपने ज़ैनब को बुलाया तो उसने स्वीकार कर लिया। आपने पूछा, तुमने ऐसा क्यों किया?

उसने कहा, मैंने सोचा, अगर यह बादशाह है तो हमें इससे राहत मिल

---

1. सहीह बुख़ारी 1/54, 2/604, 606, ज़ादुल मआद 2/437
2. वही, ज़ादुल मआद 2/137, इब्ने हिशाम 2/336

जाएगी, और अगर नबी है तो इसे ख़बर दे दी जाएगी। इस पर आपने उसे माफ़ कर दिया।

इस मौक़े पर आपके साथ हज़रत बिश्र बिन बरा बिन मारूर भी थे। उन्होंने एक लुक़्मा निगल भी लिया था, जिसकी वजह से उनकी मौत वाक़े हो गई।

रिवायतों में मतभेद है कि आपने उस औरत को माफ़ कर दिया था, या क़त्ल कर दिया था। तालमेल इस तरह पैदा किया जा सकता है कि पहले तो आपने माफ़ कर दिया था, लेकिन जब हज़रत बिश्र की मौत हो गई, तो फिर क़सास के तौर पर क़त्ल कर दिया।[1]

ख़ैबर की लड़ाई में दोनों फ़रीक़ के मारे गए लोग

ख़ैबर की अलग-अलग लड़ाइयों में कुल मुसलमान जो शहीद हुए, उनकी तायदाद सोलह है। चार क़ुरैश से, एक क़बीला अशजअ से, एक क़बीला अस्लम से, एक ख़ैबर वालों में से और बाक़ी अंसार से—

एक कथन यह भी है कि इन लड़ाइयों में कुल 18 मुसलमान शहीद हुए। अल्लामा मंसूरपुरी ने 19 लिखा है, फिर वह लिखते हैं,

'सीरत लिखने वालों ने ख़ैबर के शहीदों की तायदाद पन्द्रह लिखी है। मुझे खोजते हुए 23 नाम मिले। ज़नीफ़ बिन वाइला का नाम सिर्फ़ वाक़दी ने और ज़नीफ़ बिन हबीब का नाम सिर्फ़ तबरी ने लिया है। बिश्र बिन बरा बिन मारूर का इंतिक़ाल लड़ाई के ख़त्म होने के बाद विषैला मांस खाने से हुआ जो नबी सल्ल० के लिए ज़ैनब यहूदिया ने भेजा था। बिश्र बिन अब्दुल मुंज़िर के बारे में दो रिवायतें हैं, 1. बद्र में शहीद हुए, 2. ख़ैबर की लड़ाई में शहीद हुए। मेरे नज़दीक पहली रिवायत मज़बूत है।[2]

दूसरे फ़रीक़ यानी यहूदियों में क़त्ल होने वालों की तायदाद 93 है।

फ़िदक

अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ख़ैबर पहुंचकर मुहैयसा बिन मस्अद रज़ि० को इस्लाम की दावत देने के लिए फ़िदक के यहूदियों के पास भेज दिया था, लेकिन फ़िदक वालों ने इस्लाम अपनाने में देर की, पर जब अल्लाह ने ख़ैबर पर जीत

---

1. देखिए, ज़ादुल मआद 2/139, 140, फ़त्हुल बारी 7/497, सहीह बुख़ारी 1/449 2/610, 860, इब्ने हिशाम 2/337, 338
2. रहमतुल लिल आलमीन 2/268, 269, 270

दिला दी, तो उनके दिलों में रौब पड़ गया और उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल० के पास आदमी भेजकर ख़ैबर वालों के मामले के मुताबिक़ फ़िदक की आधी पैदावार देने की शर्तों पर समझौते की पेशकश की। आपने पेशकश क़ुबूल कर ली और इस तरह फ़िदक की धरती ख़ालिस अल्लाह के रसूल सल्ल० के लिए हुई, क्योंकि मुसलमानों ने उस पर घोड़े और ऊंट नहीं दौड़ाए थे।[1] (यानी उसे तलवार से नहीं जीता था) फ़िदक का वर्तमान नाम हाइत है जो हाइल डिवीज़न में स्थित है और मदीना से कम व बेश ढाई किलोमीटर दूर है।

वादिल क़ुरा

अल्लाह के रसूल सल्ल० ख़ैबर से फ़ारिग़ हुए तो वादिल क़ुरा तशरीफ़ ले गए। वहां भी यहूदियों की एक जमाअत थी और उनके साथ अरब की एक जमाअत भी शामिल हो गई थी।

जब मुसलमान वहां उतरे, तो यहूदियों ने तीरों से स्वागत किया। वे पहले से पूरी तरह तैयार बैठे थे। अल्लाह के रसूल सल्ल० का एक ग़ुलाम मारा गया। लोगों ने कहा, उसके लिए जन्नत मुबारक हो।

नबी सल्ल० ने कहा, हरगिज़ नहीं। उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मेरी जान है, उसने ख़ैबर की लड़ाई में ग़नीमत के माल के बंटने से पहले उसमें से जो चादर चुराई थी, वह आग बनकर उस पर भड़क रही है।

लोगों ने नबी सल्ल० का यह इर्शाद सुना तो एक आदमी एक तस्मा या दो तस्मा लेकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। नबी सल्ल० ने फ़रमाया, यह एक तस्मा या दो तस्मा आग का है।[2]

इसके बाद नबी सल्ल० ने लड़ाई के लिए सहाबा किराम की तर्तीब और संफ बंदी की। पूरी फ़ौज का झंडा हज़रत साद बिन उबादा के हवाले किया। एक झंडा हुबाब बिन मुंज़िर को दिया और तीसरा झंडा उबादा बिन बिश्र को दिया। इसके बाद आपने यहूदियों को इस्लाम की दावत दी। उन्होंने क़ुबूल न किया और उनका एक आदमी लड़ाई के मैदान में उतर आया।

इधर से हज़रत ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ि० ज़ाहिर हुए और उसका काम तमाम कर दिया। फिर दूसरा आदमी निकला। हज़रत ज़ुबैर रज़ि० ने उसे भी क़त्ल कर दिया। इसके बाद एक और आदमी मैदान में आया। उसके मुक़ाबले के लिए

1. इब्ने हिशाम 2/337, 353
2. सहीह बुख़ारी 2/608

हज़रत अली रज़ि० निकले और उसे क़त्ल कर दिया। इस तरह धीरे-धीरे उनके ग्यारह आदमी मारे गए। जब एक आदमी मारा जाता तो नबी सल्ल० बाक़ी यहूदियों को इस्लाम की दावत देते।

दिन में जब नमाज़ का वक़्त होता तो आप सहाबा किराम को नमाज़ पढ़ाते और फिर पलटकर यहूदियों के मुक़ाबले में चले जाते और उन्हें इस्लाम और अल्लाह और उसके रसूल की दावत देते। इस तरह लड़ते- लड़ते शाम हो गई।

दूसरे दिन सुबह आप फिर तशरीफ़ ले गए, लेकिन अभी सूरज नेज़ा बराबर भी ऊंचा न हुआ था कि उनके हाथ में जो कुछ था, उसे आपके हवाले कर दिया यानी आपने ताक़त के ज़ोर से जीत पाई और अल्लाह ने उनके माल आपको ग़नीमत में दिए। सहाबा किराम को बहुत सारा साज़ व सामान हाथ आया।

अल्लाह के रसूल सल्ल० वादिल क़ुरा में चार दिन ठहरे रहे। ग़नीमत का जो माल हाथ आया था, उसे सहाबा किराम रज़ि० में बांट दिया, अलबत्ता ज़मीन और खजूर के बाग़ों को यहूदियों के हाथ में रहने दिया और उसके बारे में उनसे भी (ख़ैबर वालों जैसा) मामला तै कर लिया।[1]

तैमा

तैमा के यहूदियों को जब ख़ैबर, फ़िदक और वादिल क़ुरा के रहने वालों के हथियार डालने की ख़बर मिली, तो उन्होंने मुसलमानों के ख़िलाफ़ किसी क़िस्म की मोर्चाबन्दी का प्रदर्शन करने के बजाए ख़ुद से आदमी भेजकर सुलह की पेशकश की। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने उनकी पेशकश क़ुबूल कर ली और यहूदी अपने मालों के साथ ठहरे रहे।[2] इसके बारे में एक काग़ज़ लिख दिया, जो इस तरह था—

'यह लेख है मुहम्मद रसूलुल्लाह की ओर से बनू आदया के लिए। उनके लिए ज़िम्मा है और उन पर जिज़या है, उन पर ज़्यादती न होगी, न उन्हें देश निकाला दिया जाएगा, रात मददगार होगी और दिन पक्का करने वाला (यानी यह समझौता हमेशा का होगा) और यह लेख ख़ालिद बिन सईद ने लिखा।[3]

मदीना को वापसी

इसके बाद अल्लाह के रसूल सल्ल० ने मदीना वापसी का रास्ता लिया।

---

1. ज़ादुल मआद 2/146, 147
2. ज़ादुल मआद 2/147
3. इब्ने साद 1/279

वापसी के दौरान लोग एक घाटी के क़रीब पहुंचे, तो ऊंची आवाज़ से अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, ला इला-ह इल्लल्लाहु' कहने लगे। अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया, अपने नफ़्सों के साथ आसानी मिलने पर तो तुम लोग किसी बहरे और ग़ायब को नहीं पुकार रहे हो, बल्कि उस हस्ती को पुकार रहे हो जो सुनने वाली और क़रीब है।[1]

साथ ही बीच रास्ते में एक बार रात भर सफ़र जारी रखने के बाद आपने आख़िर रात में रास्ते में किसी जगह पड़ाव डाला और हज़रत बिलाल को यह ताकीद कर सो रहे कि हमारे लिए रात पर नज़र रखना (यानी सुबह होते ही नमाज़ के लिए जगा देना) लेकिन हज़रत बिलाल रज़ि० की भी आंख लग गई। वह (पूरब की ओर मुंह करके) अपनी सवारी पर टेक लगाए बैठे थे कि सो गए, फिर कोई भी न जागा, यहां तक कि लोगों पर धूप आ गई।

इसके बाद सबसे पहले अल्लाह के रसूल सल्ल० जागे, फिर (लोगों को जगाया गया) और आप इस घाटी से निकलकर कुछ आगे तशरीफ़ ले गए, फिर लोगों को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। कहा जाता है कि यह घटना किसी दूसरे सफ़र में घटी थी।[2]

ख़ैबर की लड़ाइयों पर विस्तार में विचार करने पर मालूम होता है कि नबी सल्ल० की वापसी या तो (सन् 07 हि० के) सफ़र के आख़िर में हुई थी या फिर रबीउल अव्वल के महीने में।

सरीया अबान बिन सईद

नबी सल्ल० सारे सेनापतियों से ज़्यादा अच्छी तरह यह बात जानते थे कि हराम महीनों के ख़ात्मे के बाद मदीना को पूरे तौर पर ख़ाली छोड़ देना सूझ-बूझ के बिल्कुल ख़िलाफ़ है, जबकि मदीना के आस-पास ऐसे बद्दू मौजूद हैं जो लूट-मार और डाकाज़नी के लिए मुसलमानों की ग़फ़लत का इन्तिज़ार करते रहते हैं। इसके लिए जिन दिनों में आप ख़ैबर गए, उन्हीं दिनों में आपने बद्दुओं को डराने-धमकाने के लिए अबान बिन सईद की कमान में नज्द की ओर एक सरीया भेज दिया था। अबान बिन सईद अपना फ़र्ज़ अदा करके वापस लौटे, तो नबी सल्ल० से ख़ैबर में मुलाक़ात हुई, उस वक़्त आप ख़ैबर जीत चुके थे।

---

1. सहीह बुख़ारी 2/605
2. इब्ने हिशाम 2/340, यह घटना बहुत ज़्यादा मशहूर और हदीस की आम किताबों में लिखा हुई है। साथ ही देखिए ज़ादुल मआद 2/147

ज़्यादा गुमान यही है कि यह सरीया सफ़र 07 हि० में भेजा गया था। इसका उल्लेख सहीह बुख़ारी में आया है।[1]

हाफ़िज़ इब्ने हजर लिखते हैं कि मुझे इस सरीया का हाल न मालूम हो सका।[2]

---

1. देखिए सहीह बुख़ारी, बाब ग़ज़्वा ख़ैबर 2/608, 609
2. फ़त्हुल बारी 7/491